वार्षिक पत्रिका : 2025-26 पाँचवा अंक

कंडला नशाकाश

संवाहिका

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति
कंडला/गांधीधाम

वन्दे मातरम्

: संयोजक :

दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण

गांधीधाम

राष्ट्रीय गीत

वन्दे मातरम्

वन्दे मातरम् ।
सुजलाम् सुफलाम् मलयजशीतलाम्,
शस्यश्यामलाम् मातरम्। वन्दे मातरम्।।1।।

शुभ्रज्योत्स्ना पुलकितयामिनीम्,
फुल्लकुसुमित द्रुमदलशोभिनीम्,
सहासिनीम सुमधुरभाषिणीम्,
सुखदाम् वरदाम् मातरम्। वन्दे मातरम्।।2।।

कोटि-कोटि कण्ठ कल-कल निनाद कराले,
कोटि-कोटि भुजैर्धुत खरकरवाले,
के वॉले माँ तुमि आदते,
वहुवलधारिणी नमामि तारिणीम्,
रिपुदलवारिणी मातरम्। वन्दे मातरम् ।।3।।

तुमि विद्या तुमि धर्म, तुमि हदि तुमि मर्म,
त्वम् हि प्राणा शरीरे, बाहुते तुमि माँ शक्ति,
हदय्रे तुमि माँ भक्ति, तोमारेई प्रतिमा गड़ि मन्दिरे-मन्दिरे
वन्दे मातरम् ।।4।।

त्वम् हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी,
कमला कमलदलविहारिणी,
वाणी विद्यादायिनी, नमामि त्वाम्,
नमामि कमलाम्, अमलाम् अतुलाम्,
सुजला सुफला मातरम् । वन्दे मातरम् ।।5।।

श्यामलाम् सरलाम् सुस्मिताम् भूपिताम्,
धरणीम् भरणीम् मातरम् । वन्दे मातरम् ।।6।।

देश को एकता के सूत्र में पिरोने वाले राष्ट्रीयगीत

वंदे मातरम्

की 150वीं वर्षगांठ पर

“कंडला नराकास संवाहिका”

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति कंडला/गांधीधाम का

यह अंक प्रणामपूर्वक निवेदित है।

संपादक मंडल

मुख्य संरक्षक

सुशील कुमार सिंह, भा.रे.मै.इं.से.

अध्यक्ष, नराकास, कंडला/गांधीधाम एवं अध्यक्ष, दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण

उप संरक्षक

नीलाभ्र दासगुप्ता, भा.रा.से.

उपाध्यक्ष नराकास, कंडला/गांधीधाम एवं उपाध्यक्ष, दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण

मार्गदर्शक मंडल

हरीश सिंह चौहान, उप निदेशक (काया) एवं कार्यालयाध्यक्ष, क्षे.का.कार्या., नवी मुंबई, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार

अखिलेश कुमार, भा.रा.से., आयुक्त, केन्द्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, गांधीधाम (कच्छ) गुजरात

नितिन सैनी, भा.रा.से., आयुक्त, सीमा शुल्क आयुक्तालय, कंडला

अजय कुमार देबता, उप महानिदेशक, दीपस्तंभ और दीपपोत, (वीटीएस) निदेशालय, गांधीधाम

योगेश कुमार सिंह, सचिव, दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण

जय प्रकाश पंचाल, प्राचार्य, केन्द्रीय विद्यालय डी.पी.ए., गांधीधाम

व्योमेश रावल, प्राचार्य, केन्द्रीय विद्यालय इफको, गांधीधाम

तापस रंजन राउत, मुख्य प्रबंधक, बैकिंग सर्कल शाखा, बैंक ऑफ बरोदा, गांधीधाम

हेतल कुमार गोहेल, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, गांधीधाम शाखा

संपादक एवं अभिकल्प

नितिन सिंह तोमर

सदस्य सचिव, नराकास-कंडला/गांधीधाम एवं हिंदी अधिकारी, दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण

संपादन सहयोग

श्रीमती संगीता खिलवानी, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक, दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण

सुश्री इशरावती यादव, हिंदी अनुवादक, दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण

श्री हरीश बचवानी, वरिष्ठ लिपिक, दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण

अनुक्रमणिका

शुभेच्छा — पृष्ठ संख्या

सुशील कुमार सिंह, अध्यक्ष, दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण 1
नीलाभ्र दासगुप्ता, उपाध्यक्ष, दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण 2
हरीश सिंह चौहान, उप निदेशक (कार्यान्वयन) एवं कार्यालयाध्यक्ष, क्षे.का.कार्य., नवी मुंबई 3
नितिन सैनी, आयुक्त, सीमा शुल्क, आयुक्तालय, कंडला 4
अखिलेश कुमार, आयुक्त, केन्द्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, कच्छ - गांधीधाम, गुजरात 5
अजय कुमार देबता, उप महानिदेशक, दीपस्तंभ और दीपपोत, (वीटीएस) निदेशालय, गांधीधाम 6
योगेश कुमार सिंह, सचिव, दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण 7
जय प्रकाश पंचाल, प्राचार्य, केन्द्रीय विद्यालय डी.पी.ए., गांधीधाम 8
व्योमेश रावल, प्राचार्य, केन्द्रीय विद्यालय, इफको 8
तापस रंजन राउत, मुख्य प्रबंधक, बैंकिंग सर्कल शाखा, बैंक ऑफ बड़ौदा, गांधीधाम 9
हेतल कुमार गोहेल, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, गांधीधाम शाखा 9

संपादकीय

नितिन सिंह तोमर, सदस्य सचिव, नराकास-कंडला/गांधीधाम एवं हिंदी अधिकारी, दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण 10

रिपोर्ट

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, (नराकास), कंडला/गांधीधाम 11

साहित्यिक यात्रा

हेरी - डॉ. चंद्रशेखर शर्मा 16
स्वच्छता : योजना नहीं, व्यवहार - दीपक रमाकांत राणे 18
सुमित्रानंदन पंतजी का प्रकृति चित्रण - कप्तान सिंह 21
प्रसन्न भव: - अजय कुमार शुक्ला 24
आखिरी पीढ़ी - कंजी कामा फफल 26
महर्षि वाल्मीकि - हसमुख कुमार 27
अनाथाश्रम - नरेश सोनारीवाल 29
मेरी यादों के झरोखे से - कैलाश मानसरोवार यात्रा - विकास जोशी 31
जीवन की महत्ता - देवेश सिंह पटेल 33

कविता

क्यों इतनी लाचार है हिन्दी ? - अजीत कुमार 35
जननायक - अजय कुमार देबता 35
ऑपरेशन सिंदूर - रणबाँकुरों का गर्जन - डॉ. चंद्र शेखर पाटनी 36
बस, अपने लिए लिखते हैं ! - देवेश सिह पटेल 36
वतन से प्यार - भागीरथ राम 37
गज़ल - नरेश सोनारीवाल 37
हम दोनों - श्रीमती दीक्षा राजपुरोहित 38
तुलना के सुर - श्रीमती दीक्षा राजपुरोहित 38

शुभकामना संदेश

सत्यमेव जयते

सुशील कुमार सिंह, भा.रे.मै.इं.से.
अध्यक्ष, नराकास, कंडला/गांधीधाम एवं
अध्यक्ष, दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण

हिंदी केवल शब्दों की संरचना नहीं, वह विचारों की सुगंध, संवेदनाओं की ऊष्मा और राष्ट्रीय चेतना की सशक्त अभिव्यक्ति है। जब प्रशासन की भाषा संवेदना से जुड़ती है, तब कार्य केवल दायित्व नहीं, अपितु सेवा का स्वरुप ग्रहण कर लेता है।

मुझे यह जानकर विशेष हर्ष का अनुभव हो रहा है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कंडला/गांधीधाम द्वारा प्रकाशित पत्रिका ''कंडला नराकास संवाहिका'' अपने पाँचवे अंक के साथ पुन: पाठकों के समक्ष प्रस्तुत हो रही है। यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ चिंतन, सृजन और प्रशासनिक उत्तरदायित्वों की सार्थक अभिव्यक्ति का एक सशक्त मंच बन चुकी है।

राजभाषा नियम, 1976 के नियम-12 के अंतर्गत कार्यालयों में राजभाषा के कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने का उत्तरदायित्व संबंधित कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का होता है। इसी क्रम में, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कंडला/गांधीधाम के अध्यक्ष के रुप में मेरा सभी सदस्य कार्यालयों के कार्यालय प्रमुखों से यह आग्रह है कि वे नराकास के इस मंच के महत्व को समझते हुए समिति द्वारा आयोजित छमाही समीक्षा बैठकों में सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित करें तथा बैठकों में लिए गए निर्णयों को अपने-अपने कार्यालयों में प्रभावी रूप से क्रियान्वित करें। इससे राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति सुनिश्चित हो सकेगी। इन बैठकों में राजभाषा विभाग के अधिकारी भी सहभाग करते हैं, जो राजभाषा नीति के कार्यानव्यन एवं समीक्षा हेतु आवश्यक मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।

यह संतोष का विषय है कि समिति से संबद्ध कार्यालयों, उपक्रमों एवं बैंकों द्वारा हिंदी को कार्य-भाषा के रुप में आत्मसात करने की दिशा में निरंतर सकारात्मक प्रयास किए जा रहे हैं। इस अंक में संकलित लेख, रचानाएँ और अनुभव हिंदी की जीवंतता तथा उसके बढ़ते प्रभाव को रेखांकित करते हैं। मैं आशा करता हूँ कि ''कंडला नराकास संवाहिका'' का यह पाँचवा अंक पाठकों को न केवल बौद्धिक आनंद प्रदान करेगा, बल्कि उन्हें राजभाषा हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग हेतु प्रेरित भी करेगा। पत्रिका के प्रकाशन में योगदान देने वाले सभी लेखकगण, संपादकीय मंडल तथा सहयोगी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के प्रति मैं हार्दिक अभिनंदन व्यक्त करता हूँ।

आइए, हम सब मिलकर हिंदी को केवल कार्यालयी भाषा ही नहीं, बल्कि विचार, संवेदना और कर्म की जीवंत धारा के रुप में निरंतर आगे बढाएँ।

सादर शुभकानाओं सहित।

शुभकामना संदेश

सत्यमेव जयते

नीलाभ्र दासगुप्ता, भा.रा.से.
उपाध्यक्ष नराकास, कंडला/गांधीधाम एवं
उपाध्यक्ष, दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण

भाषा वह सेतु है, जो विचारों को कर्म से और कर्म को उद्देश्य से जोड़ती है। जब राजभाषा हिंदी प्रशासनिक दायित्वों के साथ आत्मीयता का स्वर ग्रहण करती है, तब केवल नियमों तक सीमित नहीं रहती, बल्कि सृजन और संवाद की प्रेरक शक्ति बन जाती है।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कंडला/गांधीधाम की हिंदी पत्रिका ''कंडला नराकास संवाहिका'' के पाँचवें अंक के प्रकाशन के अवसर पर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रयोग, प्रचार और प्रसार के साथ-साथ विचारशील अभिव्यक्ति तथा रचनात्मक सहभागिता का एक सशक्त मंच है।

हम सभी भली-भांति जानते हैं कि भारत की संवैधानिक व्यवस्था के अंतर्गत हिंदी को संघ सरकार की राजभाषा के रुप में स्वीकार किया गया है। अत: केंद्र सरकार के कार्यालयों, उपक्रमों एवं बैंकों में कार्यरत हम सभी का यह दायित्व बनता है कि हम न केवल कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करें, बल्कि हिंदी के प्रचार-प्रसार से जुड़ी गतिविधियों को भी निरंतर प्रोत्साहित करें, जिससे भारत सरकार की राजभाषा नीति के उद्देश्यों की प्रभावी पूर्ति सुनिश्चित हो सके। हिंदी पत्रिकाओं का प्रकाशन इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण और सार्थक प्रयास है।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) के मंच के माध्यम से विभिन्न कार्यालय समिति के सदस्य आपस में जुड़ते हैं। सयुक्त स्तर पर हिंदी पत्रिका का प्रकाशन सभी सदस्य कार्यालयों के एक साझा सूत्र में पिरोने का कार्य भी करता है तथा आपसी अनुभवों, उपलब्धियों और विचारों के आदान-प्रदान का अवसर प्रदान करता है।

मैं, नराकास की पत्रिका ''कंडला नराकास संवाहिका'' के पाँचवें अंक के प्रकाशन हेतु संपादकीय मंडल एवं सभी योगदानकर्ताओ को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका सदस्य कार्यालयों एवं उनमें कार्यरत कार्मिको को अपने ज्ञान, सृजनशील साहित्य, विचारों एवं उपलब्धियों को साझा करने का निरंतर सशक्त मंच प्रदान करती रहेगी और अपने उद्देश्य में सफल होगी।

अंत में, ईश्वर से यही प्रार्थना है कि हम सभी स्वस्थ रहें और अपने कर्तव्यों का निर्वहन निरंतर समर्पण भाव से करते रहें।

सादर शुभेच्छाओं सहित।

शुभकामना संदेश

सत्यमेव जयते

हरीश सिंह चौहान

उप निदेशक (कार्यान्वयन) एवं कार्यालयाध्यक्ष, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय,
नवी मुंबई, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कंडला/गांधीधाम द्वारा प्रकाशित की जा रही वार्षिक राजभाषा पत्रिका 'कंडला नराकास संवाहिका' के पाँचवें अंक के प्रकाशन के अवसर पर मुझे अत्यंत प्रसन्नता एवं आत्मिक संतोष का अनुभव हो रहा है। यह पत्रिका समिति के सतत प्रयासों, रचनात्मक दृष्टिकोण तथा राजभाषा हिंदी के प्रति उसकी प्रतिबद्धता का सशक्त परिचायक है। निरंतरता के साथ पाँचवें अंक तक पहुँचना अपने-आप में इस बात का प्रमाण है कि समिति द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन को केवल औपचारिक दायित्व न मानकर एक जीवंत एवं सतत प्रक्रिया के रूप में अपनाया गया है।

यह विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कंडला/गांधीधाम के अध्यक्ष कार्यालय के रूप में दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण विगत पंद्रह वर्षों से अधिक समय से महत्वपूर्ण भूमिका निभाता आ रहा है। दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण द्वारा प्रदत्त निरंतर मार्गदर्शन, सहयोग और नेतृत्व के परिणामस्वरूप नगर में स्थित विभिन्न केन्द्रीय सरकारी कार्यालयों के मध्य राजभाषा हिंदी के प्रयोग, प्रसार एवं प्रोत्साहन को एक सुदृढ़ दिशा प्राप्त हुई है। यह संस्थागत सहयोग राजभाषा नीति के प्रभावी कार्यान्वयन का एक आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करता है।

भारत के संविधान द्वारा हिंदी को संघ की राजभाषा का स्थान प्रदान किया गया है। संविधान की इस भावना को व्यवहार में उतारना हम सभी शासकीय अधिकारियों एवं कर्मचारियों का सामूहिक दायित्व है। नगर स्तर पर कार्यरत राजभाषा कार्यान्वयन समितियाँ इस दिशा में सेतु की भूमिका निभाती हैं, जहाँ विभिन्न कार्यालयों के बीच समन्वय स्थापित कर हिंदी को प्रशासन की कार्यभाषा के रूप में सुदृढ़ किया जाता है। 'कंडला नराकास संवाहिका' जैसी पत्रिकाएँ इस प्रयास को गति देने का एक प्रभावी और सार्थक माध्यम सिद्ध होती हैं।

इस पत्रिका के माध्यम से न केवल राजभाषा संबंधी गतिविधियों को अभिव्यक्ति मिलती है, बल्कि अधिकारियों एवं कर्मचारियों की साहित्यिक, बौद्धिक तथा रचनात्मक प्रतिभाओं को भी एक सशक्त मंच प्राप्त होता है। इसमें प्रकाशित लेख, आलेख, कविताएँ एवं विचारोत्तेजक रचनाएँ हिंदी में अभिव्यक्ति के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करती हैं। साथ ही, सामाजिक, सांस्कृतिक, तकनीकी, प्रशासनिक, पर्यावरणीय एवं आर्थिक विषयों पर प्रस्तुत सामग्री पाठकों के ज्ञान-विस्तार में भी सहायक सिद्ध होती है। यह पत्रिका नगर में स्थित विभिन्न केन्द्रीय कार्यालयों की उपलब्धियों, नवाचारों एवं श्रेष्ठ प्रथाओं को साझा करने का भी एक प्रभावी माध्यम है। इससे न केवल आपसी संवाद और सहयोग को बल मिलता है, बल्कि राजभाषा के क्षेत्र में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा एवं प्रेरणा का वातावरण भी निर्मित होता है। परिणामस्वरूप हिंदी का प्रयोग कार्यालयीन कार्यों में और अधिक सहज, प्रभावी एवं व्यापक रूप में स्थापित होता है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि 'कंडला नराकास संवाहिका' का यह पाँचवाँ अंक भी पूर्ववर्ती अंकों की भाँति उच्च गुणवत्ता, विषयवस्तु की विविधता एवं भाषा की शुद्धता के मानकों पर खरा उतरेगा तथा राजभाषा हिंदी के सुदृढ़ीकरण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

इस प्रशंसनीय एवं सार्थक प्रयास के लिए मैं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कंडला/गांधीधाम, दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण, संपादक मंडल तथा सभी सहयोगी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ। मैं आशा करता हूँ कि यह पत्रिका भविष्य में भी निरंतर प्रगति करती हुई राजभाषा हिंदी की सेवा में अपना योगदान देती रहेगी। सादर शुभेच्छाओं सहित

शुभकामना संदेश

सत्यमेव जयते

नितिन सैनी, भा.रा.से.
आयुक्त, सीमा शुल्क
आयुक्तालय, कंडला

नगर राजभाषा कार्यान्यन समिति (नराकास), कंडला द्वारा प्रकाशित **''कंडला नराकास संवाहिका''** के पंचम संस्करण के प्रकाशन के शुभ अवसर पर मैं कंडला कस्टम्स के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों की ओर से समिति के सभी पदाधिकारियों, सदस्यों एवं इससे जुड़े सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूँ।

यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार एवं सरकारी कार्यों में इसके प्रभावी क्रियान्वयन की दिशा में एक सराहनीय प्रयास है । इस प्रकार के प्रकाशन न केवल हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित करते हैं, बल्कि विभिन्न कार्यालयों के मध्य समन्वय, रचनात्मकता एवं भाषा के प्रति सकारात्मक द्रष्टिकोण को भी सुदृढ़ करते हैं ।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि **''कंडला नगर राजभाषा संवाहिका''** भविष्य में भी राजभाषा हिंदी के विकास, नवाचार एवं उत्कृष्ट कार्यो को उजागर करने का सशक्त माध्यम बनेगी तथा सभी कार्यालयों को राजभाषा संबंधी दायित्वों के निर्वहन हेतु प्रेरित करेगी ।

मैं एक बार पुन: नराकास, कंडला की पूरी टीम को इस महत्वपूर्ण उपलब्धि के लिए बधाई देता हूँ और इनके उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

शुभकामना संदेश

सत्यमेव जयते

अखिलेश कुमार, भा.रा.से.
आयुक्त
केन्द्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय,
कच्छ – गांधीधाम, गुजरात

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) – कंडला/गांधीधाम अपनी हिन्दी पत्रिका 'कंडला नराकास संवाहिका' के पंचम अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। नराकास का सदस्य होने के नाते, केन्द्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, गांधीधाम, राजभाषा हिंदी के विकास के प्रति प्रतिबद्ध है।

भाषा संस्कृति की वाहक होती है। भाषा किसी भी देश को सांस्कृतिक रूप से एक सूत्र में बाँधने का कार्य करती है। हिंदी भाषा ने यह कार्य बड़ी ही सहजता से किया है। हिंदी एक ऐसी भाषा है जिसने सभी भाषाओं को अपने में समाहित करने में कभी भी संकोच नहीं किया है और यही समरसता हिंदी को बड़ा बनाती है।

इस पत्रिका के माध्यम से हमें हिंदी के प्रयोग, लेखन, कला एवं अभिव्यक्ति के लिए एक सशक्त मंच प्राप्त हुआ है । यह पत्रिका न केवल हमारे व्यवहारों, अनुभवों एवं रचनात्मकता को व्यक्त करती है, बल्कि हिंदी भाषा को भी एक आयाम देती है। मैं आशा करता हूँ कि इस पत्रिका के प्रकाशन से, नराकास के अंतर्गत आने वाले सभी कार्यालयों का, हिंदी के प्रति उत्साह और प्रयोग हेतु सकारात्मक वातावरण का सृजन होगा । इस पत्रिका में समाहित रचनाओं में, हमें विभिन्न विभागों की कार्यशैली का दर्शन होता है ।

मैं संपादन मंडल एवं पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ जिन्होंने अपने परिश्रम एवं एकनिष्ठता से इस अंक को एक अलग ऊंचाई पर पहुंचाया है । इसके साथ ही मैं आशान्वित हूँ कि यह कार्य अपने इसी सकारात्मक रूप के साथ अनवरत जारी रहेगा ।

शुभकामना संदेश

सत्यमेव जयते

अजय कुमार देबता
उप महानिदेशक
दीपस्तंभ और दीपपोत,
(वीटीएस) निदेशालय, गांधीधाम

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) – कंडला/गांधीधाम द्वारा प्रकाशित राजभाषा पत्रिका 'कंडला नराकास संवाहिका' के सफल प्रकाशन पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ। यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार तथा सृजनात्मक अभिव्यक्ति को सशक्त बनाने की दिशा में एक सराहनीय एवं महत्वपूर्ण प्रयास है । 'कंडला नराकास संवाहिका' का प्रकाशन निश्चित ही हिंदी प्रेमियों के लिए प्रेरणास्त्रोत सिद्ध होगा तथा विचारों की अभिव्यक्ति, साहित्यिक सृजन और राजभाषा के प्रभावी उपयोग को नई दिशा प्रदान करेगा। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) की भूमिका सदैव उल्लेखनीय रही है और रहेगी। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह प्रकाशन राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में एक सफल प्रयास सिद्ध होगा।

इस उल्लेखनीय उपलब्धि पर नराकास परिवार को पुन: हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

शुभकामना संदेश

योगेश कुमार सिंह
सचिव, दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण

नराकास द्वारा प्रकाशित यह ''कंडला नराकास संवाहिका'' राजभाषा हिंदी के सुव्यवस्थित प्रयोग, प्रभावी क्रियान्वयन तथा सतत विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है। यह जानकर प्रसन्नता होती है कि दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण में राजभाषा हिंदी को केवल संवैधानिक दायित्व के रुप में ही नहीं, बल्कि प्रशासनिक कार्य-संस्कृति के अभिन्न अंग के रुप में अपनाया जा रहा है।

भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुरुप कार्यालयीन कार्यो, पत्राचार, टिप्पणियों, प्रतिवेदनों एवं प्रकाशनों में हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग हेतु निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। इस संदर्भ में नराकास की भूमिका उल्लेखनीय रही है। नराकास के तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम, प्रतियोगिताएँ तथा साहित्यिक गतिविधियाँ अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी के प्रति प्रेरित करने में प्रभावी सिद्ध हुई हैं।

प्रस्तुत पत्रिका में संकलित लेख, विचार एवं रचनाएँ प्रशासनिक अनुभवों के साथ-साथ साहित्यिक संवेदना का संतुलित समन्वय प्रस्तुत करती हैं । यह प्रकाशन न केवल भाषा-प्रयोग को प्रोत्साहित करता है, बल्कि हिंदी को कार्य की भाषा के रुप में अधिक सहज, सक्षम एवं प्रभावशाली बनाने में भी सहायक है।

मुझे विश्वास है कि नराकास भविष्य में भी इसी समर्पण एवन प्रतिबद्धता के साथ राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं क्रियान्वयर हेतु सक्रिय भूमिका निभाता रहेगा और हिंदी को कार्यपालिका की सशक्त अभिव्यक्ति बनाए रखने में योगदान देता रहेगा।

इस उत्कृष्ट प्रकाशन के लिए नराकास के सभी सदस्यों, संपादकीय मंडल एवं सहयोगी अधिकारियों/कर्मचारियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

हिंदी सुदृढ़ प्रशासन की आधारशिला है । आइए, इसे और अधिक प्रभावी एवं व्यवहारिक बनाएं। धन्यवाद।

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

शुभकामना संदेश

जय प्रकाश पंचाल
प्राचार्य
केन्द्रीय विद्यालय डी.पी.ए., गांधीधाम

हमें यह जानकर अत्यंत हर्षानुभूति हो रही है कि नगार राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास)-कांडला/गांधीधाम द्वारा हिंदी पत्रिका **''कंडला नराकास संवाहिका''** का प्रकाशन किया जा रहा है। राजभाषा हिंदी हमारी राष्ट्रीय पहचान, सांस्कृतिक विरासत तथा संवैधानिक दायित्वों की सशक्त अभिव्यक्ति है। इस प्रकार के सार्थक एवं रचनात्मक प्रयास हिंदी के प्रयोग एवं संवर्धन को नई दिशा प्रदान करते हैं।

केन्द्रीय विद्यालय संगठन भारत सरकार की राजभाषा नीति के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु सदैव प्रतिबद्ध रहा है। केन्द्रीय विद्यालय डी.पी.ए., गांधीधाम में भी शैक्षणिक, प्रशासनिक एवं सह-शैक्षणिक कार्यों में हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग को निरंतर प्रोत्साहित किया जाता है। यह पत्रिका शिक्षकों, कर्मचारियों को अपने विचारों की रचनात्मक अभिव्यक्ति हेतु एक सशक्त मंच प्रदान करेगी।

हमें पूर्ण विश्वास है कि **''कंडला नराकास संवाहिका''** राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी तथा हिंदी के प्रयोग को और अधिक व्यापक एवं प्रभावशाली बनाएगी । इस सराहनीय प्रयास हेतु संपादक मंडल एवं इससे जुड़े सभी प्रत्यक्ष सहयोगियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

शुभकामना संदेश

व्योमेश रावल
प्राचार्य
केन्द्रीय विद्यालय, इफको

हम सभी को यह जानकर अत्यंत खुशी हो रही है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) कंडला / गांधीधाम द्वारा हिंदी पत्रिका 'कंडला नराकास संवाहिका" के प्रथम संस्करण का प्रकाशन किया जा रहा है।

पत्रिका से राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में सहायता मिलेगी और कंडला/गांधीधाम नगर प्रक्षेत्र में स्थित केन्द्र सरकार के समस्त कार्यालयों में कार्यरत सभी कर्मचारियों को अपनी मौलिक सृजनात्मक शक्ति परस्पर साझा करने का एक मंच प्राप्त होगा। इसी के साथ राजभाषा के क्षेत्र में सभी सदस्य कार्यालयों की गतिविधियों के प्रदर्शन एवं आपसी प्रेमभाव/ समन्वय स्थापित करने का अद्वितीय अवसर भी प्राप्त होगा।

केंद्रीय विद्यालय, इफको-गांधीधाम की ओर से पत्रिका की सफलता हेतु पत्रिका के संपादक मण्डल एवं सभी सहयोगियों को बहुत- बहुत शुभकामनाए।

बैंक ऑफ़ बड़ौदा
Bank of Baroda

शुभकामना संदेश

तापस रंजन राउत
मुख्य प्रबंधक
बैंकिंग सर्कल शाखा
बैंक ऑफ बड़ौदा, गांधीधाम

कंडला नराकास द्वारा प्रकाशित कंडला नराकास संवाहिका पत्रिका पाँचवे अंक की प्रकाशन के शुभ अवसर पर मैं संपादक मंडल, सहयोगी सदस्यों तथा राजभाषा कार्या से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रभावी प्रयोग, कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रोत्साहन तथा साहित्यिक एवं रचनात्मक अभिव्यक्ति को सशक्त मंच प्रदान करने का एक सराहनीय प्रयास है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह प्रकाशन राजभाषा नीति के क्रियान्वयन को और अधिक सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

मैं कामना करता हूँ कि कंडला नराकास की यह पत्रिका निरंतर उन्नति के पथ पर अग्रसर रहे तथा हिंदी भाषा के गौरव और प्रतिष्ठा को नई उँचाइयों तक ले जाए।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया
Union Bank of India

शुभकामना संदेश

हेतल कुमार गोहेल
यूनियन बैंक ऑफ इंडिया
गांधीधाम शाखा

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति – कंडला गांधीधाम द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'कंडला नराकास संवाहिका' के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ। यह प्रयास सकारात्मक सोच, रचनात्मक प्रतिभा को एक मंच प्रदान करेगी व जागरुकता के साथ हिन्दी के प्रचार प्रसार को अवश्य बढ़ावा देगी। यह पत्रिका राजभाषा के प्रभावी उपयोग, सृजनात्मक लेखन एवं भाषायी चेतना को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। हम इसके सफल एवं निरंतर प्रकाशन की कामना करते हैं।

संपादकीय

नितिन सिंह तोमर
सदस्य सचिव, नराकास-कंडला/गांधीधाम एवं
हिंदी अधिकारी, दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण

राजभाषा हिंदी किसी एक कार्यालय, व्यक्ति अथवा आयोजन तक सीमित विषय नहीं है, बल्कि यह हमारे प्रशासनिक तंत्र की संवैधानिक आत्मा और सांस्कृतिक चेतना का अभिन्न अंग है। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कंडला/गांधीधाम द्वारा प्रकाशित वार्षिक पत्रिका 'कंडला नराकास संवाहिका' का यह पाँचवाँ अंक इसी व्यापक दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करता है। निरंतर पाँच वर्षो तक इस पत्रिका का प्रकाशन इस तथ्य को रेखांकित करता है कि नगर स्तर पर राजभाषा हिंदी केवल एक औपचारिक दायित्व न होकर एक सतत, जीवंत और सहभागी प्रक्रिया के रूप में विकसित हो रही है।

कंडला/गांधीधाम जैसे औद्योगिक, वाणिज्यिक एवं पत्तन-प्रधान नगर में कार्यरत विभिन्न केन्द्रीय कार्यालय प्रशासनिक विविधता, तकनीकी जटिलताओं और व्यावसायिक गतिशीलता के साथ कार्य करते हैं। ऐसे परिवेश में हिंदी को संपर्क, समन्वय और कार्य-निष्पादन की प्रभावी भाषा के रुप में स्थापित करना एक चुनौतीपूर्ण, किंतु अत्यंत आवश्यक कार्य है। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने इस चुनौती को अवसर में परिवर्तित करते हुए हिंदी को न केवल कार्यालयीन कार्यो की भाषा के रूप में प्रोत्साहित किया है, बल्कि उसे विचार, अभिव्यक्ति और रचनात्मकता का सशक्त माध्यम भी बनाया है।

यह संवाहिका इसी सामूहिक प्रयास का साकार रूप है। यह पत्रिका केवल लेखों और कविताओं का संकलन मात्र नहीं है, बुल्कि यह नगर में स्थित विभिन्न कार्यालयों के अनुभवों, उपलब्धियों, नवाचारों और रचनात्मक प्रयासों का साझा मंच है। इसके माध्य से अधिकारियों एवं कर्मचारियों में यह विश्वास सुदृढ़ होता है कि हिंदी में कार्य करना किसी प्रकार सी बाधा नहीं, बल्कि स्पष्टता, प्रभावशीलता और आत्मीयता को बढ़ाने वाला माध्यम है।

इस अंक में सम्मिलित विविध विषयों पर आधारित रचनाएँ यह सिद्ध करती हैं कि हिंदी न केवल साहित्यिक अभिव्यक्ति की भाषा है, बल्कि यह प्रशासन, तकनीक, पर्यावरण, सामाजिक सरोकारों और आर्थिक विमर्श को भी समान रूप से सक्षम ढंग से अभिव्यक्त कर सकती है। जब अधिकारी एवं कर्मचारी अपने कार्यानुभवों और विचारों को हिंदी में प्रस्तुत करते हैं, तो भाषा के प्रति आत्मविश्वास स्वत: सुदृढ़ होता है और राजभाषा का प्रयोग अधिक स्वाभाविक रूप में स्थापित होता है।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की यह विशेषता रही है कि उसने राजभाषा के प्रयोग को केवल नियमो और लक्ष्यों तक सीमित न रखते हुए सहभागिता, प्रेरणा और रचनात्मकता के साथ आगे बढ़ाया है। नियमित बैठकों, प्रतियोगिताओं, कार्यशालाओं तथा पत्रिका प्रकाशन जैसे प्रयासों ने नगर में राजभाषा हिंदी के प्रति सकारात्मक वातावरण के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस क्रम में 'कंडला नराकास संवाहिका' ने निरंतर संवाद और अनुभव-साझाकरण का कार्य किया है।

संपादकीय दृष्टि से यह स्वीकार करना आवश्यक है कि राजभाषा का सशक्तिकरण एक दीर्घकालिन प्रक्रिया है, जिसमें निरंतर अभ्यास, सजगता और प्रतिबद्धता अपेक्षित होती है। पत्रिका का यह पाँचवाँ अंक इसी निरंतरता का प्रतीक है और भविष्य में और अधिक सुदृढ़ एवं प्रभावी प्रयासों के लिए प्रेरित करता है।

अंत में, संपादकीय दल की यह विनम्र अपेक्षा है कि 'संवाहिका' का यह अंक पाठको के लिए उपयोगी, प्रेरणादायी और विचारोत्तेजक सिद्ध होगा। सभी अधिकारीगण, कर्मचारीगण एवं हिंदी प्रेमियों से अनुरोध है कि वे इस अंक के संबंध में अपने बहुमूल्य सुझाव एवं प्रतिक्रियाएँ अवश्य साझा करें, जिससे आगामी अंको को और अधिक समृद्ध बनाया जा सके और नगर में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार को नई दिशा प्राप्त हो सके । धन्यवाद ।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), कंडला/गांधीधाम

भारत जैसे बहुभाषी राष्ट्र में राजभाषा हिंदी केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं, बल्कि प्रशासनिक एकात्मता, राष्ट्रीय संवाद और संवैधानिक प्रतिबद्धता का सशक्त प्रतीक है। संविधान के अनुच्छेद 343 से 351 तक निहित प्रावधानों के माध्यम से संघ सरकार को यह दायित्व सौंपा गया है कि वह अपने प्रशासनिक कार्यों में हिंदी के प्रगतिशील प्रयोग को सुनिश्चित करे। इसी संवैधानिक भावना को व्यवहार में रूपांतरित करने के उद्देश्य से गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा समय-समय पर संस्थागत व्यवस्थाएँ विकसित की गई, जिनमें नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति अर्थात् नराकास एक अत्यंत महत्वपूर्ण, व्यावहारिक और प्रभावशाली मंच के रूप में स्थापित हुई है। नराकास का मूल स्वरूप किसी औपचारिक निरीक्षण तंत्र तक सीमित नहीं है, बल्कि यह केंद्रीय सरकारी कार्यालयों, सार्वजनिक उपक्रमों, बैंकों तथा स्वायत्त संस्थाओं के मध्य राजभाषा हिंदी के प्रयोग को सहज, समन्वित और सतत बनाने की एक जीवंत प्रक्रिया है। सभी नराकासों की आवश्यकता इस तथ्य से उपजती है कि राजभाषा नीति केवल निर्देशों और नियमावली से नहीं, बल्कि निरंतर संवाद, पारस्परिक प्रेरणा और सकारात्मक प्रतिस्पर्धा से सुदृढ़ होती है। किसी नगर या क्षेत्र विशेष में स्थित विभिन्न केंद्रीय कार्यालय जब एक साझा मंच पर एकत्र होकर अपने अनुभव, उपलब्धियाँ और चुनौतियाँ साझा करते हैं, तब हिंदी का प्रयोग केवल दायित्व न रहकर एक स्वाभाविक कार्य-संस्कृति का रूप ले लेता है। नराकास बैठकों के माध्यम से कार्यालयों में किए जा रहे हिंदी कार्यों की समीक्षा होती है, श्रेष्ठ प्रयोग सामने आते हैं और व्यावहारिक कठिनाइयों के समाधान खोजे जाते हैं। यही कारण है कि नराकास को राजभाषा कार्यान्वयन की 'जमीनी प्रयोगशाला' कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी।

राजभाषा नियम 1976 के अंतर्गत निर्धारित के गए भाषायी क्षेत्रों में गुजरात राज्य "ख" में आता है। गुजरात राज्य के हमारे कच्छ ज़िले में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन हेतु नराकास का सुव्यवस्थित ढांचा स्थापित है और नराकास-कंडला/गांधीधाम का कोड 262 निर्धारित है। इसी ढांचे के अंतर्गत नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कंडला/गांधीधाम क्षेत्र में स्थित केंद्रीय सरकारी कार्यालयों के लिए एक सशक्त समन्वय मंच के रूप में कार्यरत है। यह उल्लेखनीय तथ्य है कि पिछले पंद्रह वर्षों से अधिक समय से

दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण **(पूर्व में कंडला पोर्ट)** इस नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति का अध्यक्ष कार्यालय रहा है। यह दीर्घकालिक दायित्व अपने-आप में दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण की राजभाषा के प्रति प्रतिबद्धता, प्रशासनिक संवेदनशीलता और नेतृत्व क्षमता को रेखांकित करता है। अध्यक्ष कार्यालय के रूप में दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण ने न केवल नराकास की बैठकों का नियमित और प्रभावी आयोजन सुनिश्चित किया है, बल्कि सदस्य कार्यालयों को निरंतर मार्गदर्शन, प्रेरणा और सहयोग भी प्रदान किया है।

गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के निर्देशानुसार नराकास, कंडला/गांधीधाम द्वारा प्रत्येक वर्ष दो बैठकों का आयोजन किया जाता है, एक जनवरी माह में तथा दूसरी अगस्त माह में। जनवरी की बैठक प्रायः वार्षिक कार्ययोजना, लक्ष्यों और दिशा-निर्देशों पर केंद्रित होती है, जबकि अगस्त माह की बैठकका विशेष महत्व वार्षिक प्रगति के समग्र मूल्यांकन से जुड़ा होता है। इसी बैठक में सदस्य कार्यालयों द्वारा वर्षभर किए गए राजभाषा कार्यों का निष्पक्ष आकलन कर उन्हें प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से राजभाषा शील्ड प्रदान की जाती है। यह शील्ड केवल एक प्रतीकात्मक सम्मान नहीं, बल्कि उन सतत प्रयासों की सार्वजनिक मान्यता है, जिनके माध्यम से हिंदी प्रशासनिक व्यवहार का अंग बनती है।

अगस्त 2025 में आयोजित नराकास, कंडला/गांधीधाम की बैठक इसी परंपरा का सशक्त उदाहरण रही। इस अवसर पर राजभाषा शील्ड योजना 2024, जिसकी मूल्यांकन अवधि **1 जनवरी 2024 से 31 दिसंबर 2024** तक निर्धारित थी, के अंतर्गत घोषित परिणामों पर विस्तार से चर्चा की गई। सरकारी कार्यालय वर्ग में **दीपस्तंभ और दीपपोत निदेशालय, गांधीधाम** ने **प्रथम** स्थान प्राप्त कर यह सिद्ध किया कि तकनीकी और परिचालनात्मक कार्यों में भी हिंदी का प्रभावी प्रयोग संभव है। **पोत पत्तन स्वास्थ्य संगठन, कंडला** को **द्वितीय** तथा **क्षेत्रीय वनस्पति संगरोध केंद्र, कंडला** को **तृतीय** स्थान प्राप्त हुआ। इसी प्रकार सरकारी उपक्रम कार्यालय वर्ग में **गेल (इंडिया) लिमिटेड, समाखियाली एवं कंडला ने प्रथम, पॉवर ग्रिड कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड ने द्वितीय** तथा **इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड, कंडला मेन टर्मिनल ने तृतीय स्थान** अर्जित किया। सरकारी बैंक कार्यालय वर्ग में **यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, गांधीधाम शाखा ने प्रथम, बैंक ऑफ बड़ौदा, गांधीधाम शाखा** ने **द्वितीय** और **सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, गांधीधाम शाखा** ने **तृतीय** स्थान प्राप्त कर यह प्रमाणित किया कि बैंकिंग जैसे व्यावहारिक और जन-संपर्क प्रधान क्षेत्र में भी हिंदी की प्रभावी उपस्थिति सुनिश्चित की जा सकती है।

वर्ग	प्रथम स्थान	द्वितीय स्थान	तृतीय स्थान
सरकारी कार्यालय वर्ग	दीपस्तंभ और दीपपोत निदेशालय, गांधीधाम	पोत पत्तन स्वास्थ्य संगठन, कंडला	क्षेत्रीय वनस्पति संगरोध केंद्र, कंडला
सरकारी उपक्रम कार्यालय वर्ग	गेल (इंडिया) लिमिटेड, समाखियाली एवं कंडला	पॉवर ग्रिड कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड	इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड, कंडला मेन टर्मिनल
सरकारी बैंक कार्यालय वर्ग	यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, गांधीधाम शाखा	बैंक ऑफ बड़ौदा, गांधीधाम शाखा	सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, गांधीधाम शाखा

राजभाषा के कार्यान्वयन में केवल कार्यालयी प्रक्रियाएँ ही नहीं, बल्कि कर्मचारियों की रचनात्मक सहभागिता भी समान रूप से महत्वपूर्ण है। इसी दृष्टि से हिंदी पखवाड़ा के अवसर पर आयोजित गतिविधियाँ नराकास की कार्यसंस्कृति का अभिन्न अंग हैं। **हिंदी पखवाड़ा 2025** के दौरान, प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी नराकास, कंडला/गांधीधाम द्वारा सदस्य कार्यालयों के लिए **हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता** का आयोजन किया गया। **16 सितंबर 2025** को आयोजित इस प्रतियोगिता में सदस्य कार्यालयों के कार्मिकों ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर यह सिद्ध किया कि हिंदी उनके लिए केवल कार्य की भाषा नहीं, बल्कि अभिव्यक्ति का माध्यम भी है। प्रतियोगिता में दीपस्तंभ और दीपपोत निदेशालय (वीटीएस) के कनिष्ठ हिंदी अनुवादक **श्री नरेश सोनारीवाल** ने **प्रथम स्थान** प्राप्त कर पाँच हजार रुपये की पुरस्कार राशि अर्जित की। क्षेत्रीय वनस्पति संगरोध केंद्र, कंडला के सहायक वनस्पति संरक्षण अधिकारी **श्री अमित सिंह** को **द्वितीय** स्थान हेतु चार हजार रुपये तथा केंद्रीय विद्यालय रेलवे, गांधीधाम की शिक्षिका **सुश्री प्रतिभा शर्मा** को **तृतीय** स्थान हेतु तीन हजार रुपये की पुरस्कार राशि प्रदान की गई। इसके अतिरिक्त समुद्री वाणिज्य विभाग, कंडला के आशुलिपिक **श्री धर्मेन्द्र कुमार** को **प्रेरणा पुरस्कार** स्वरूप एक हजार रुपये प्रदान किए गए। इस प्रतियोगिता में नराकास सदस्य कार्यालयों के कुल चौदह कार्मिकों की सहभागिता ने हिंदी के प्रति व्यावहारिक और रचनात्मक लगाव को सशक्त रूप से अभिव्यक्त किया।

क्रम	प्रतिभागी का नाम	पद एवं कार्यालय	प्राप्त स्थान	पुरस्कार राशि
1	श्री नरेश सोनारीवाल	कनिष्ठ हिंदी अनुवादक, दीपस्तंभ और दोपपोत निदेशालय (वीटीएस)	प्रथम	₹ 5000/-
2	श्री अमित सिंह	सहायक वनस्पति संरक्षण अधिकारी, क्षेत्रीय वनस्पति संगरोध केंद्र, कंडला	द्वितीय	₹ 4000/-
3	सुश्री प्रतिभा शर्मा	शिक्षिका, केंद्रीय विद्यालय रेलवे, गांधीधाम	तृतीय	₹ 3000/-
4	श्री धर्मेन्द्र कुमार	आशुलिपिक, समुद्री वाणिज्य विभाग, कंडला	प्रेरणा पुरस्कार	₹ 1000/-

समग्र रूप से देखा जाए तो नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कंडला/गांधीधाम ने दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण के नेतृत्व में राजभाषा हिंदी के संवैधानिक दायित्व को एक जीवंत प्रशासनिक संस्कृति में रूपांतरित करने का निरंतर प्रयास किया है। बैठकों की नियमितता, मूल्यांकन की पारदर्शिता, पुरस्कारों के माध्यम से प्रोत्साहन तथा हिंदी पखवाड़ा जैसी गतिविधियों के द्वारा नराकास ने यह स्थापित किया है कि जब नेतृत्व, समन्वय और प्रतिबद्धता एक साथ चलते हैं, तब हिंदी का प्रयोग स्वाभाविक रूप से विस्तृत होता है। भविष्य में भी नराकास, कंडला/गांधीधाम से यह अपेक्षा की जाती है कि वह राजभाषा हिंदी को केवल आदेशों और परिपत्रों तक सीमित न रखते हुए, प्रशासनिक सोच, व्यवहार और अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बनाती रहेगी, यही इसकी वास्तविक सफलता और सार्थकता है।

अगस्त 2025 में आयोजित नराकास, कंडला/गांधीधाम की बैठक और राजभाषा शील्ड योजना 2024 पुरस्कार वितरण

हिंदी पखवाड़ा 2025 के दौरान नराकास, कंडला के सदस्य कार्यालयों के लिए हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन एवं पुरस्कार वितरण समारोह

''हेरी''

(घर में बच्चों द्वारा कुत्ते का पिल्ला ले आने से हुए उपद्रव की मनोरंजक दास्तां)

चंद्रशेखर शर्मा
सहायक वनस्पति संरक्षण अधिकारी
क्षेत्रीय वनस्पति संगरोध केंद्र, कंडला

देव बाबू के बहुत मना करने पर भी दोनों बच्चे एक दिन गली से छोटा सा पिल्ला उठा लाए। घर के पीछे चार दीवारी के भीतर ही जो खाली जगह है, वहीं उसके रहने की व्यवस्था की गई। थर्माकोल और गत्तों से उसके लिए घर बनाकर उसमें पुरानी कंबल बिछाई गई। दोस्तों के साथ गंभीर मंत्रणा के पश्चात सर्वसम्मति से उका नाम ''हेरी'' रखा गया। दोनों भाई बहन अब पूरे जतन से हेरी की सेवा में लग गए।

किसी अज्ञात कारण से देव बाबू को कुत्ते पसंद नहीं थे। अब घर के भीतर कुत्ते के आगमन से उनकी परेशानी बढ़ा दी थी। बच्चे उनकी नज़रें बचा कर उसको खाना खिलाते, नहलाते और टहलाने ले जाते। मोहल्ले में कुत्ता प्रेमियों की संख्या उम्मीद से अधिक थी, उन्ही की सहायता से कुत्तों का डॉक्टर घर आ कर उसके टिके लगा जाता और कुत्तों के शारीरिक विकास के लिए विशिष्ट खाद्य पदार्थो की अनिवार्यता पर व्याख्यान देकर चला जाता। जिसका परिणाम यह हुआ कि देव बाबू के खून पसीने की कमाई का एक बड़ा हिस्सा अब उस कुत्ते के लालन पालन पर व्यय होने लगा।

नन्हे हेरी के लिए गृहस्वामिनी के हदय में भी अकस्मात ममता का फरना फूट पड़ा और वह भी बच्चों के पक्ष मेन जा खड़ी हुई। इस घर में अब केवल देव बाबू ही उस जीव के विरोधी बचे थे।

जैसे-जैसे वह बड़ा होता गया उसके भौंकने का शोर तीव्र से तीव्रतर होता गया। जैसे ही देव बाबू के सोने का समय होता हेरी नाम के उस जीव के शरीर में भौंकने की इच्छा प्रबल हो जाती। कुत्ता होने के लिए किसी भी जीवन में जिन अनिवार्य गुणों की आवश्यकता होती है, इसमें वे सभी गुण प्रचुरता से कुछ अधिक मात्रा में विद्यमान थे।

देव बाबू ने जो एक कार्य सुरक्षा की दृष्टि से अपने हित में किया था, वह कालांतर उनके लिए काफी फायदेमंद साबित हुआ। उन्होंने बच्चों से स्पष्ट कह दिया कि इस कुत्ते को कभी भी उनके सामने लेकर नहीं आओगे। इसलिए बच्चे उसके गले में पट्टा बांध कर उसे उनसे दूर ही रखते थे। बच्चों के सभी दोस्तों के पास विदेशी नस्ल के सभ्य और सुसंस्कृत कुत्ते थे, किंतु हेरी एक सड़क छाप आवारा कुत्ता था इसलिए इंसानों के साथ रहने के बावजूद भी उसके भीतर एक भी मानवीय गुण विकसित नहीं हुआ।

उसने घर के पर्दे, सोफे की गद्दियां, चद्दरें और बच्चों के कपड़े सब कुछ काट डाले। बच्चों और गृहस्वामिनी के पास हेरी द्वारा किए गए किसी भी नुकसान के लिए अत्यंत तार्किक प्रत्यतर होते थे। देव बाबू इन उत्तरों के सामने अपना माथा पीट कर रह जाते। फिर उसने एक-एक करके दोनों बच्चों और गृहस्वामिनी को भी काट लिया।

बारी बारी सबको एंटी-रेबीज़ टीके लगवाए गए । इतने पर थी किसी के हदय में हेरी के प्रति प्रेम में कोई कमी नहीं देखी गई। बल्कि घर के वास्तु को इसका जिम्मेदार ठहराया गया और सभी इस शोध कार्य में जुट गए कि किस तरह से घर का वातावरण कुत्ते के रहने योग्य बनाया जाए ।

गृहस्वामिनी को विश्वास था कि कुत्ते बिल्लियों में भूत प्रेत इत्यादि विपत्तियों को पूर्व में भांप लेने की अद्‌भुत क्षमता होती है। हेरी घर में आने वाली समस्त अदृश्य बलाओं को अपने सिर पर ले लेता है। इस तरह से इस सुकौमल जीवन पर अल्पायु में ही घर के प्रत्येक सदस्य की जीवन रक्षा का महत्वपूर्ण भार आ पड़ा था । घर में देव बाबू की उपस्थिति हेरी की स्वतंत्रता में बाधक थी लिहाजा वो उन्हें सख्त नापसंद करने लगा । उन्हे देखते ही वह अरूचिकर भावभंगिमाओं और कर्णभेदी चीत्कार से अपने हदय के उद्‌गार व्यक्त कर देने में कोई कमी न रखता था । देव बाबू यथासंभव उसकी इन हरकतों की उपेक्षा करने का प्रयास करते। देव बाबू का कुत्ते के प्रति उपेक्षित व्यवहार गृहस्वामिनी के हदय को पीड़ा पहुंचाता था । उसने तय किया कि वह इसका कारण जानकर रहेगी।

पंडित राम प्रसाद को बुलवाकर पोथी-पत्रा खुलवाया गया । ग्रह नक्षत्रों की सभी संभावित स्थितियों पर गंभीर चिंतन के पश्चात जो कारण जनने में आया, वह था देव बाबू की कुण्डली के अष्टम भाव में शनि की वक्र दृष्टि।

इक्यावन रुपए हथेली पर रख दिए जाने के बाद पंडित राम प्रसाद ने इसका सटीक निवारण भी बता दिया ''शनि देव के प्रकोप से बचने हेतु प्रत्येक शनिवार को श्रद्धापूर्वक गुड़ के गुलगुले कुत्ते को खिलाने होंगे''।

कुत्ते के भौंकने से हदयाघात द्वारा पति की मौत का सदमा तो फिर भी बर्दाश्त किया जा सकता है, किंतु अपनी आंखों के सामने शनि की वक्र दृष्टि से पति का अमंगल होते हुए देखना एक पति परायण स्त्री के लिए असहनीय था । धर्मभीरु गृहस्वामिनी के हदय में इस बात का तनिक भी संदेह नहीं रहा कि ''कुत्ते की सेवा में रही कोई भी कमी परोक्ष रूप से पति के कष्ट का कारण बन सकती है''।

इसलिए अब प्रत्येक शनिवार को घर में गुड़ के गुलेगुले बनने लगे । देव बाबू की आंखों के सामने गुलगुलोन से सजी प्लेट ले जाकर प्रेम पूर्वक कुत्ते के सामने रख दी जाती । देव बाबू को ऐसे स्वादिष्ट खाने की इच्छा तो बहुत होती मगर मन मसोस कर रह जाना पड़ता, क्योंकि गृहस्वामिनी की आस्था को चुनौती देना असंभव था । पंडित जी ने गुलगुले कुत्ते को खिलाने को कहा था पति को नहीं । अल्प शिक्षित होते हुए भी गृहस्वामिनी पति और कुत्ते में फकर समझाती थी । इसलिए जो वस्तु कुत्ते के निमित्त बनी है उसे पति को देकर अपना परलोक नहीं बिगाड़ सकती थी ।

अभी हेरी स्वादिष्ट मीठे गुलगुले खाकर परितृप्ति के एहसास की मखमली चादर पर लोटपोट हो ही रहा था कि बाकी ग्रह भी एक-एक करके अनपी वक्र दृष्टि लिए कतार में आ खड़े हुए । प्रत्येक ग्रह की शान्ति हेतु उसका एक विशिष्ट भोग निर्धारित था, इसलिए अब हैरी को प्राय: नाना प्रकार के व्यंजनों पर हाथ साफ करने का अवसर मिलने लगा।

किसी तरह ग्रहों को ठीक से शांत होने का अवसर मिला भी न था कि भेरुजी का उपद्रव प्रारंभ हो गया । ''कुत्ता भेरुजी का वाहन होता है, और भेरुजी की नाराजगी घर में तबाही का कारण बन सकती है''पंडित राम प्रसाद की अकाटय शास्त्र प्रमाणित बातों पर गृहस्वामिनी को तनिक भी संदेह न था।

पति सेवा को ही अपना स्त्री धर्म समझने वाली मासूम गृहणी किसी भी तरह से अपने पति को भेरुजी को क्रोधाग्नि में जलने के लिए नहीं छोड़ सकती थी । उसने प्रण ले लिया कि वह पति और भेरुजी के मध्य एक सुरक्षा दीवार की तरह खड़ी होकर रहेगी। हेरी की अनन्य भाव से सेवा ही उसके सुहाग की सुरक्षा का एकमात्र उपाय था । पति की सात पुश्तों को एक साथ लानत भेजने पर भी सृष्टि में कोई बदलाव न होगा, किंतु अगर हेरी को कष्ट पहुंचा तो फिर भेरुजी का प्रकोप किसी भी तरह से शांत करने का कोई उपाय न बचेगा । धीरे धीरे हेरी ने घर में भेरुजी के वाहन के रुप में एक बहुत ही सम्मानजनक स्थिति प्राप्त कर ली ।

घर में हेरी के बढ़ते हुए प्रभुत्व से खिन्न होकर एक दिन देव बाबू ने अपने दफ्तर में एक दरख्वास्त दी, कि स्वास्थ्य कारणों से उनका तबादला समुद्र किनारे स्थित एस सुदूर प्रदेश में कर दिया जाए । दफ्तर में देव बाबू को बहुत सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था अत: उनकी दरख्वास्त को मंजूर कर लिया गया । कुछ वर्षो पश्चात जब देव बाबू सेवानिवृत हुए तो उन्होंने वहीं समुद्र के किनारे एक छोटा सा घर बनवा लिया, जिसमें रहकर अध्ययन करते हुए वे स्त्रियों के स्वभाव को समझने का प्रयास करते। कभी-कभी चिट्ठी के माध्यम से अपनी खैर-खबर घर पर पहुंचा देते।

दूसरी तरफ अपने कर्तव्य निष्पादन के प्रति पूर्ण समर्पित गृहस्वामिनी प्रात: काल ब्रह्म मुहूर्त में भेरुजी को भोग लगाना नहीं भूलती है। वह घर को दिन भर धूप और लोबान की खुशबू से सराबोर रखते हुए पंडित राम प्रसाद द्वारा ग्रह शांति हेतु बताए गए विभिन्न मंत्रों का उच्चारण करती रहती है। दोनों बच्चे उच्च शिक्षित होकर नौकरी के लिए दूसरे शहरों में निवास करते हैं ।

यद्यपि देव बाबू अब उसके साथ नहीं रहते किंतु ढलती उम्र की इस निष्पाप, एकांतवासिनी स्त्री के चेहरे पर पति की सुरक्षा के लिए अपना जीवन समर्पित कर देने का संतोष स्पष्ट झलकता है। और शायद यही इसके जीने का सहारा भी है।

स्वच्छता : योजना नहीं, व्यवहार

दीपक रमाकांत राणे
वरिष्ठ उप सचिव, सामान्य प्रशासन विभाग
दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण

स्वच्छता को प्रायः हम एक सरकारी योजना, एक औपचारिक कार्यक्रम अथवा किसी विशेष अवधि में संचालित अभियान के रूप में देखते आए हैं। फाइलों में दर्ज दिशा-निर्देश, कार्यालयों की दीवारों पर लगे पोस्टर, तथा समय-समय पर मनाए जाने वाले "स्वच्छता पखवाड़े" इस धारणा को और अधिक मजबूत करते हैं कि स्वच्छता कोई पृथक गतिविधि है, जिसे निर्धारित समय पर निभा लिया जाए। किंतु वस्तुतः स्वच्छता न तो केवल एक योजना है और न ही मात्र एक प्रशासनिक दायित्व। स्वच्छता मूलतः एक व्यवहार, एक संस्कार और एक संस्थागत संस्कृति है, जो तभी प्रभावी बनती है जब वह हमारे दैनिक आचरण में स्वतः समाहित हो जाती है। "हर वस्तु की एक जगह होती है", यह सिद्धांत केवल घर या गोदाम तक सीमित नहीं है। यही सिद्धांत कार्यालयों, विशेष रूप से सरकारी कार्यालयों, पर भी समान रूप से लागू होता है। यदि हर उपयोगी वस्तु की एक निश्चित जगह है, तो यह स्वीकार करना भी अनिवार्य है कि कचरे की भी एक निश्चित, निर्धारित और वैज्ञानिक जगह होती है। समस्या तब उत्पन्न होती है जब हम इस बुनियादी सत्य को अपने व्यवहार में स्थान नहीं देते। परिणामस्वरूप कार्यालयों में अव्यवस्था, गंदगी और अवांछित सामग्री का अंबार लग जाता है, जो न केवल स्वच्छता के सिद्धांतों के विपरीत है, बल्कि प्रशासनिक दक्षता पर भी प्रतिकूल प्रभाव डालता है।

सरकारी कार्यालय किसी भी राज्य व्यवस्था की रीढ़ होते हैं। यहीं से नीतियाँ बनती हैं, योजनाएँ लागू होती हैं और जनता से प्रत्यक्ष संवाद स्थापित होता है। इसलिए सरकारी कार्यालयों की स्थिति केवल आंतरिक व्यवस्था का विषय नहीं होती, बल्कि वह शासन की मानसिकता और प्राथमिकताओं को भी प्रतिबिंबित करती है। जब कोई नागरिक किसी सरकारी कार्यालय में प्रवेश करता है और उसे चारों ओर बिखरी फाइलें, कोनों में जमा कचरा, धूल से ढकी अलमारियाँ और अनुपयोगी उपकरण दिखाई देते हैं, तो यह दृश्य अवचेतन रूप से प्रशासन की गंभीरता पर प्रश्नचिह्न लगा देता है।

स्वच्छता का संबंध केवल स्वास्थ्य या

होती है। समस्या तब उत्पन्न होती है जब हम इस बुनियादी सत्य को अपने व्यवहार में स्थान नहीं देते। परिणामस्वरूप कार्यालयों में अव्यवस्था, गंदगी और अवांछित सामग्री का अंबार लग जाता है, जो न केवल स्वच्छता के सिद्धांतों के विपरीत है, बल्कि प्रशासनिक दक्षता पर भी प्रतिकूल प्रभाव डालता है।

सरकारी कार्यालय किसी भी राज्य व्यवस्था की रीढ़ होते हैं। यहीं से नीतियाँ बनती हैं, योजनाएँ लागू होती हैं और जनता से प्रत्यक्ष संवाद स्थापित होता है। इसलिए सरकारी कार्यालयों की स्थिति केवल आंतरिक व्यवस्था का विषय नहीं होती, बल्कि वह शासन की मानसिकता और प्राथमिकताओं को भी प्रतिबिंबित करती है। जब कोई नागरिक किसी सरकारी कार्यालय में प्रवेश करता है और उसे चारों ओर बिखरी फाइलें, कोनों में जमा कचरा, धूल से ढकी अलमारियाँ और अनुपयोगी उपकरण दिखाई देते हैं, तो यह दृश्य अवचेतन रूप से प्रशासन की गंभीरता पर प्रश्नचिह्न लगा देता है।

स्वच्छता का संबंध केवल स्वास्थ्य या सौंदर्य से नहीं है; यह कार्यकुशलता, अनुशासन और उत्तरदायित्व से भी गहराई से जुड़ी हुई है। एक स्वच्छ और सुव्यवस्थित कार्यालय वातावरण कर्मचारियों में सकारात्मक ऊर्जा उत्पन्न करता है, कार्य के प्रति सम्मान की भावना को प्रोत्साहित करता है और समय की बर्बादी को कम करता है। इसके विपरीत, गंदगी और अव्यवस्था मानसिक थकान, चिड़चिड़ापन और कार्य में अरुचि को जन्म देती है। इस दृष्टि से देखा जाए तो स्वच्छता प्रशासनिक उत्पादकता का एक मौन लेकिन प्रभावी कारक है। आज अनेक सरकारी कार्यालयों में स्वच्छता की स्थिति चिंताजनक बनी हुई है। वर्षों पुरानी फाइलें, जिनकी न तो प्रशासनिक आवश्यकता शेष है और न ही कानूनी प्रासंगिकता, फिर भी अलमारियों, मेजों और गलियारों में स्थान घेरे हुए हैं। टूटे फर्नीचर, अनुपयोगी मशीनें और बेकार सामग्री कार्यालय परिसर में इस तरह पड़ी रहती हैं मानो वे व्यवस्था का स्वाभाविक हिस्सा हों। यह स्थिति केवल स्थान की कमी का परिणाम नहीं है, बल्कि निर्णय न लेने की प्रवृत्ति और जिम्मेदारी टालने के व्यवहार का भी संकेत देती है।

कचरे की समस्या को गंभीरता से समझने के लिए उसके प्रकारों को पहचानना आवश्यक है। सामान्यतः सरकारी कार्यालयों में चार प्रकार का कचरा उत्पन्न होता है, ठोस कचरा, जैविक कचरा, इलेक्ट्रॉनिक कचरा (ई-वेस्ट) और संवेदनशील अथवा खतरनाक अपशिष्ट। प्रत्येक प्रकार के कचरे की प्रकृति अलग है और उसका निपटान भी अलग प्रक्रिया से होना चाहिए। दुर्भाग्यवश, व्यवहार में इन सभी को एक ही श्रेणी में रख दिया जाता है और अंततः वे या तो किसी कोने में जमा हो जाते हैं या सामान्य कूड़े के साथ फेंक दिए जाते हैं। विशेष रूप से ई-वेस्ट आधुनिक सरकारी कार्यालयों की एक गंभीर और बढ़ती हुई समस्या है। कंप्यूटर, लैपटॉप, प्रिंटर, स्कैनर, यूपीएस, केबल, बैटरियाँ, ये सभी उपकरण प्रशासनिक कार्यों के लिए अनिवार्य हैं। किंतु जब ये अनुपयोगी हो जाते हैं, तब इनके निपटान को लेकर स्पष्टता और तत्परता दोनों का अभाव दिखाई देता है। अनेक कार्यालयों में पुराने इलेक्ट्रॉनिक उपकरण वर्षों तक स्टोर-रूम में पड़े रहते हैं, न तो उनका पुनर्चक्रण होता है और न ही उनका वैज्ञानिक ढंग से निस्तारण। यह न केवल पर्यावरण के लिए हानिकारक है, बल्कि यह दर्शाता है कि स्वच्छता को हम अब भी केवल दृश्य गंदगी तक सीमित मानते हैं।

नीतियों और व्यवहार के बीच की दूरी स्वच्छता के क्षेत्र में विशेष रूप से स्पष्ट दिखाई देती है। कागज़ों पर नियम होते हैं, परिपत्र जारी होते हैं और दिशा-निर्देश उपलब्ध होते हैं, किंतु उनके पालन की जिम्मेदारी अक्सर अस्पष्ट बनी रहती है। स्वच्छता को प्रायः निचले स्तर के कर्मचारियों की जिम्मेदारी मान लिया जाता है, जबकि वास्तविकता यह है कि स्वच्छता एक साझा उत्तरदायित्व है। जब तक अधिकारी स्वयं अपने कक्ष, अपनी मेज और अपने निर्णयों में स्वच्छता को प्राथमिकता नहीं देंगे, तब तक व्यवहारिक परिवर्तन संभव नहीं है।

स्वच्छ भारत अभियान ने स्वच्छता को राष्ट्रीय चेतना का विषय बनाया है। यह अभियान केवल शौचालय निर्माण या कचरा संग्रह तक सीमित नहीं है, बल्कि यह नागरिक और संस्थागत व्यवहार में परिवर्तन का आह्वान करता है। इस अभियान की वास्तविक सफलता तभी मानी जा सकती है जब सरकारी कार्यालय स्वयं उदाहरण प्रस्तुत करें। यदि वही संस्थान, जो जनता से स्वच्छता की अपेक्षा करते हैं, अपने आंतरिक वातावरण में इस मूल्य को आत्मसात नहीं कर पाते, तो अभियान का नैतिक प्रभाव कमजोर पड़ जाता है।

सरकारी विभागों को यह स्वीकार करना होगा कि वे केवल नियम लागू करने वाली इकाइयाँ नहीं हैं, बल्कि वे समाज के लिए आदर्श व्यवहार के केंद्र भी हैं। कार्यालयों में कचरे का पृथक्करण, ई-वेस्ट के लिए अलग व्यवस्था, पुराने दस्तावेज़ों की समयबद्ध समीक्षा और निष्पादन, ये सभी कार्य केवल प्रशासनिक सुधार नहीं हैं, बल्कि यह दर्शाते हैं कि स्वच्छता को गंभीरता से लिया जा रहा है। व्यवहार परिवर्तन स्वच्छता की दिशा में सबसे चुनौतीपूर्ण चरण है। यह परिवर्तन आदेशों, चेतावनियों या अस्थायी अभियानों से नहीं आता। इसके लिए निरंतर प्रशिक्षण, संवेदनशीलता और स्पष्ट जवाबदेही की आवश्यकता होती है। कर्मचारियों को यह समझाना आवश्यक है कि स्वच्छता कोई अतिरिक्त कार्य नहीं है, बल्कि यह उनके पेशेवर आचरण का अभिन्न अंग है। जब व्यक्ति यह स्वीकार कर लेता है कि उसका कार्यस्थल भी उसके व्यक्तित्व का प्रतिबिंब है, तब स्वच्छता स्वाभाविक व्यवहार बन जाती है।

संस्थागत स्तर पर यदि कुछ सरल लेकिन दृढ़ कदम उठाए जाएँ, तो स्वच्छता को स्थायी रूप दिया जा सकता है। कार्यालयों में स्पष्ट लेबलिंग के साथ कचरा पृथक्करण, ई-वेस्ट के लिए अधिकृत एजेंसियों से समन्वय, नियमित निरीक्षण, और स्वच्छता मानकों को वार्षिक मूल्यांकन से जोड़ना, ये सभी उपाय व्यवहार परिवर्तन को गति दे सकते हैं। इसके साथ-साथ यह भी आवश्यक है कि स्वच्छता को केवल भौतिक सफाई तक सीमित न रखा जाए, बल्कि उसे कार्य संस्कृति का हिस्सा बनाया जाए।

अंततः यह स्पष्ट है कि स्वच्छता कोई एक-दिवसीय आयोजन नहीं, बल्कि एक सतत प्रक्रिया है। यह हमारे सोचने, निर्णय लेने और कार्य करने के ढंग में परिलक्षित होती है। जब हम यह स्वीकार कर लेते हैं कि हर वस्तु की एक जगह होती है और कचरे की भी एक निश्चित, निर्धारित और वैज्ञानिक जगह होती है, तब स्वच्छता किसी योजना की मोहताज नहीं रहती। वह स्वयं व्यवहार बन जाती है। सरकारी कार्यालयों के संदर्भ में यह व्यवहार विशेष महत्व रखता है, क्योंकि यहीं से समाज को दिशा, दृष्टि और मूल्यबोध प्राप्त होता है। स्वच्छता यदि व्यवहार बन जाए, तो योजना अपने आप सफल हो जाती है, और यही स्वच्छ भारत अभियान की वास्तविक आत्मा है।

सुमित्रानंदन पंतजी का प्रकृति चित्रण

कप्तान सिंह
प्र. स्ना. शिक्षक-हिंदी
केन्द्रीय विद्यालय इफको गांधीधाम

कविवर सुमित्रानंदन पंत जी जिन्होंने प्रकृति के आलिंगन में आकर नारी के रुप सौंदर्य ठुकरा दिया, ये कोमल कल्पनीय कवि हैं । पूरे हिंदी साहित्य में जितने लोगों ने प्रकृति का चित्रण किया है, उनमें पंत जी का चित्रण अद्‌वितीय एवं अनुपम परिलक्षित होता है । प्रकृति ही उनके काव्य का स्त्रोत रही उन्हों ने कहा है - ''कविता करने की प्रेरणा मुझे प्रकृति निरीक्षण से मिली जिसका श्रेय मेरी जन्मभूमि कूर्मांचल प्रदेश है।''

प्रकृति की यह प्रेरणा कवि के जनजीवन का अंग बन गई । इसके अतिरिक्त कवि ने प्रकृति के संवेदनात्मक रुप, रहस्यात्मक रुप, प्रतीकात्मक रुप, आलंकारिक रुप, मानवीकरण रुप आदि का चित्रण भी किया है। हिंदी साहित्य के सबसे बड़े **प्रगतिवादी अथवा मार्क्सवादी यानी जनवादी आलोचक डॉ. रामकुमार वर्मा जी** ने पंतजी के प्रकृति चित्रों से प्रभावित होकर कहा है कि- ''प्रकृति का क्षेत्र इन कवियों की कविता का क्षेत्र है ऐसी स्थिति में इस कविता को यदि छायावादी की बजाय प्रगतिवादी कहें तो अधिक युक्तिसंगत होगा''

यूरोप में प्रकृति के लिए प्रसिद्ध कवि वर्डसवर्थ

माने जाते हैं इसलिए पंत जी को हिंदी का 'वर्डसवर्थ' भी कहा जाता है । पंत जी का प्रकृति चित्रण देश-प्रेम को व्यक्त करता है । इनके प्रकृति चित्रण में भारत का पूरा भूगोल समाहित है । मां की मृत्यु के बाद पंत जी ने स्वयं को इसके लिए समर्पित कर दिया । प्रकृति का भयानक रूप इनके वर्णण में नहीं है । इनके काव्य का प्रकाशन वीणा के सरस मृदुलता से भरे स्वरों से हुआ । कई स्थानों पर पंत जी ने प्रकृति को स्वयं की शिक्षिका भी माना है ।

पंत जी की ये पंक्तियां प्रसिद्ध हैं -

मां से बढ़कर रही धात्री, तू बचपन में मेरे हित ।

धात्री कथा रुपक भर, तूने किया जनक का वन पोषण ।

पंत जी का प्रगति चित्रण अनोखा है । इस संबंध में श्री शातिप्रिय द्विवेदी जी ने कहा है कि – ''वीणा में प्रकृति को आलंबन बनाकर जिस प्रकार की कोमल तथा उल्लासमयी अनुभूतियां पंत जी ने प्रकट की हैं उतनी अन्य आधुनिक कवियों में दुर्लभ है ।''

पंत जी के प्रकृति चित्रण का सविस्तार वर्णन –

१. प्रकृति का आलंबन रुप में चित्रण –

जब प्रकृति का वर्णन विशुद्ध प्रकृति दृष्टिकोण से किया जाए वह आलंबन रुप होता है। इस रुप में भी कई शैलियाँ सम्मिलित हैं जो निम्न हैं :–

(अ)– वस्तु परिगणन शैली –

नव बसंत की रुप राशि का, ऋतु उत्सव यह उपवन सोच रहा हूँ जग-जग में, क्या सचमुच लगता सोभन

अन्य पंक्तियाँ

हंसमुख कटीटफ्ट रेशमी चटकीले नशटरशम, मिली स्वीट पी एडंडंस फिल बास्केट औ ब्लू बेटम । इस पद में कवि की विदेशी फूलों के संबंध में जानकारी का परिचय तो मिलता है, परंतु काव्यत्व की छाया का अभाव है ।

(ब) – संश्लिष्ट रुप में प्रकृति चित्रण –

पावस ऋतु थी पर्वत प्रदेश, पल-पल परिवर्तित प्रकृति वेश मेखलाकार पर्वण अपार, अपने सहस्त्र दृग सुमन फाड़ इन पंक्तियों में पर्वतीय प्रदेश का वर्णन है । पंत जी की काव्यत्व सूक्षम दृष्टि है ।

1. – मानवीय रुप में प्रकृति चित्रण

पीली पड़, निर्बल, कोमल, कृश देह लता कुम्लाई विषमता लाज में लिपटी सांसों में शून्य समाई।

इन पंक्तियों में चांदनी का निराशाजनक रुप में चित्रण हुआ है ।

2. उद्दीपन रुप में प्रकृति चित्रण –

वन के विपटो से डाल-डाल, कोमल कलियों से लाल-लाल। फैली नव मधु की रुप ज्वाल, जल-जल प्राणों की अलि उन्मन। इस प्रकार प्रकृति वियोग से विरही मन को व्यथित कर देती है पंक्तियों में कठोरता व निष्ठुरता दिखाई गई है। ग्रंथि, परिवर्तन आदि कविताओं में पंत जी ने ऐसे उदाहरण प्रस्तुत किए हैं ।

3. प्रकृति का अलंकार रुप में चित्रण –

समस्त छायावादी कवियों ने अपनी कविताओं में अलंकारों का स्वच्छंद प्रयोग किया है । पंत जी ने अपनी कविता में चमत्कार पैदा करने के लिए प्रकृति के विभिन्न उपकरणों को उपमान रुप में प्रस्तुत किया है –

ग्रथि का एक उदाहरण देखिए –

इंदु की छवि में तिमिर के गर्भ में, अनिल की ध्वनि में, सलिल के वीचि में, एक उत्सुकता बिछड़ती थी, सरल सुमन की स्मृति में ।

अन्य उदाहरण -

मेरा पावस ऋतु सा जीवन, मानस का उमडा अपार मन गहरे धुंधले धुले सांवले, मेघों से मेरे भरे नयन यहां उपमा अलंकार का सौंदर्य प्रस्तुत है।

4. प्रकृति का संवेदनात्मक रुप में चित्रण –

जब पाठक को प्रकृति अपने सुख में सुखी एवं दु:ख में दुखी होने लगे, तब उसे प्रकृति का संवेदनात्मक चित्रण कहते हैं।

इसके दो रुप हैं –

अ– इसमें प्रकृति मानव के आनंद व खुशियों में शामिल होकर स्वयं प्रसन्न होने लगती है ।

ब– इसमें प्रकृति मानव के शोक, विषाद, रुदन आदि भावों में भावनात्मक रुप से शामिल होकर दुखमयी हो जाती है।

पंत जी ने प्रकृति के इन दोनों रुपों का सजीव, आकर्षक और बेजोड़ वर्णन किया ।

सुंदर उदाहरण

खौलता इधर जल लोचन, मूधती उधर मृत्यु क्षण क्षण अभी उत्सव को हासहुलास, अभी अवसाद, अश्रु,उच्छवास अचिरता देख जम की आप, शून्य भरता समीर निश्वास, डालता पातों पर चुपचाप, ओस के

आंसू नीलाकाश, सिसक उठता समुद्र का मनल, सिहर उठते उडुगन, उपर्युक्त पंक्तियों में पंत जी ने सागर को सिसकिया लेते हुए, आकाश को आंसू बहते हुए मानवीकरण अलंकार के अनूठे उदाहरण के साथ चित्रित किया है

5 वातावरण निर्माण के रुप में प्रकृति चित्रण

आधुनिक कवियों में वातावरण निर्माण के लिए प्रकृति का उपयोग एक सामान्य बात है। हालांकि यह वर्णन अन्य कवियों ने भी किया। परंतु पंत जी का विशेष स्थान रखता है । जहाँ प्रकृति का गहरा एवं गंभीर वातावरण होता है वहाँ प्रकृति का उल्लास पूर्ण वातावरण होता है। ग्रंथि का एक उदाहरण जो बसंत की मादक बेला का वर्णन करता है – वह मधुर मधुमास था, जब गंध से मुक्त होकर झूमते थे मधु, पल रसिक पिक के सरस तरुण रसाल थे, अवनि के सुख बढ़ रहे थे दिवस से जानकार ऋतुराज का नव आगमन, अखिल कोमल कामनाएं अवनी की खिल उठी थी मृदुल सुमनों में कई, सफल होने की अवनि में ईश से पंत जी ने परिवर्तन में प्रकृति का आलंबनकारी रुप का चित्रण किया है । उन्होंने सुबह को संध्या में व चांदनी को अंधकार में परिवर्तित किया है ।

6. प्रकृति का मानवीय रुप में चित्रण

जब प्रकृति को मानव का रुप दे दिया जाता है तो वह उसका मानवीय रुप कहलाता है। छायावाद की एक विशेषता प्रकृति का मानवीकरण भी रहा है। इसमें प्रकृति मानव के सचेतन यानी सजीव रुप में प्रतीत होती है। संध्या में परिवर्तन के रुप का मानवीय वर्णन कौन तुम रुपसी कौन, व्योम से उतर रही चुपचाप छिपी निजी छाया छवि में, अपार सुनहला फैला केश कलाप मधुर, मंथर मृदु मौन। कवि ने प्रकृति की छाया, बादल, नौका विहार, चांदनी आदि कविताओ में प्रकृति को मानवीय भावनाओं के साथ तारतम्य बिठाया है ।

7. प्रतीकात्मक रुप में प्रकृति चित्रण

प्रकृति के इस रुप में प्रतीकों के माध्यम से प्रकृति वर्णन किया है क्योंकि पन्त छायावादी कवि रहे हैं, फलस्वरुप उनके काव्य में प्रतीकात्मक वर्णन की झलक दृष्टिगोचर होती है ।

परिवर्तन कविता का एक उदाहरण –

अभी तो मुकुट बंधा था, हुए कल ही हल्दी के हाथ दुले भी न थे लाज के बोल, खेले भी चुंबन शून्य कपोल, हाय रुक गया यही संसार, बना सिंदूर अंगार, बात-हत-लतिका वह सुकुमार पड़ी है छिन्नाधार, इन पंक्तियों का भाव समझकर यह स्पष्ट हो जाता है कि पन्त वास्तव में प्रकृति के चितेरे कवि हैं ।

8. उपदेशिका के रुप में प्रकृति चित्रण

पंत जी ने संपूर्ण समाज को उपदेशात्मक रुप में अपने साहित्य को माध्यम बनाकर प्रकृति का वर्णन किया है । जहाँ कवि ने एक कविता 'गाता स्वर्ग' में इसका उदाहरण पेश किया है –

हसमुख प्रसून सिखलाते, पलभर है जो हंस पाओ, अपने उर की सौरभ से, जग का आंगन भर जाओ। कवि ने प्रात: बेला का वर्णन किया है, प्रकृति का सौन्दर्य रोचक है ।

निष्कर्ष

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि पंत जी प्रकृति के वास्तविक सुकुमार कवि कहे जाने योग्य हैं । उनका प्रकृति चित्रण इस प्रकार घटित हुआ है । मानो वे प्रकृति से वार्तालाप या प्रत्यक्ष साक्षात्कार कर रहे हों । भले ही अन्य कवियों ने प्रकृति का वर्णन किया है परंतु पंत की तुलना में वे थोड़े छोटे ही बैठते हैं। अत: उनका यह कहना कि एकांत में कोई आकर्षण मेरे अंत:करण में सौंदर्य का जाला बुनकर मेरी चेतना को तन्मय कर देता है, पूर्णतया सत्य साबित होता है । हम कह सकते हैं कि पंत जी का प्रकृति चित्रण अद्वितीय, अनुपम, बेजोड़, गजब, बेहतरीन, चिताकर्षक, उत्कृष्ट, अद्‌भुत, विलक्षण एवं मौलिक है ।

प्रसन्न भवः

अजय कुमार शुक्ला
सहायक आयुक्त, केंद्रीय माल और सेवाकर,
कच्छ (गांधीधाम)

प्रस्तुत आलेख आचरण के महत्व एवं सफल व्यक्तित्व के लिए आवश्यक अव्यवों को समझने के प्रयास के साथ ही प्रगति के लिए आवश्यक कठोर परिश्रम के साथ प्रसन्नचित आचरण के सामंजस्य की अनिवार्यता की स्वीकृति प्रदान करता है।

प्रसन्न भव: ये क्या सिर्फ एक सूत्र है, अथवा मानव जीवन की आवश्यकता ? क्या प्रगतिशील एवं अर्थपूर्ण मानव जीवन के लिए प्रसन्नता अति आवश्यक घटक नहीं है ? क्या ये सत्य नहीं है कि विश्व के सभी धर्मो के प्रमुखों एव विभिन्न सम्प्रदाय के संतो/महापुरुषों द्वारा प्रसन्नता की कामना आदिकाल से ही की जाती रही है ? सभी योग्य दार्शनिक, शिक्षाविद तथा समाज कल्याण से जुड़े समर्पित अग्रणियों ने सदैव स्वस्थ वातावरण के निर्माण और आवश्यकता की ओर ध्यान खींचने का प्रयास किया है ।

सभी अभिभावक चाहते हैं कि उनकी संताने सुखी एवं प्रसन्न रहें और सभी संतानें चाहती हैं कि उनके अभिभावक प्रसन्न मानसिक अवस्था में रहें । विश्व के लगभग सभी जिम्मेदार एवं समर्पित राजनेता चाहते हैं कि उनके देश के सभी निवासी प्रसन्नचित रहकर जीवन यापन करें, सरकारी विभागों के जिम्मेदार विभाग अध्यक्ष हों अथवा कोई कॉर्पोरेट प्रमुख, सभी की इच्छा एवं प्रयास होते हैं कि वे स्वयं उनके अधीन कार्यरत लोगों के जीवन में खुशियों के निमित बनें । राष्ट्र निर्माण की अभिलाषा से ओत-प्रोत तमाम नीति निर्धारकों के अथक प्रयास एवं समाज के प्रत्येक केंद्र से मानव मात्र के प्रसन्न मानसिक अवस्था में जीवन निर्वाह करने की अभिलाषाओं के बावजूद भी क्या वास्तविकता में ऐसा हो रहा है? क्या संसार में तनाव, संघर्ष, असंतोष और आपसी कलह का कोई स्थान नहीं है ?

पूरी दुनिया में घटित होने वाली अपराधिक घटनाएँ विशेषकर हत्या और आत्महत्या जैसी हृदयविदारक घटनाएँ उपर प्रस्तुत कियो गए कुछ प्रश्नों का जवाब दे डालती हैं । जब भी इस तरह की कोई घटना होती है तो समाज एवं देश के सभी संवेदनशील लोगों को अन्दर तक झकझोर डालती है और ज्यादा मानसिक कष्ट तब अनुभव होता है जब असीम संभावनाओं से भरा हुआ इस तरह की हताशा का सामना करता है कि आत्महत्या जैसे जघन्य अपराध की ओर उन्मुख हो जाता है। ऐसी कष्टप्रद परिस्थितियाँ के निर्मित होने पर एक प्रश्न हमारे समक्ष उपस्थित हो जाता है कि, क्या प्रसिद्ध ब्रिटिश दार्शनिक एवं तर्कशास्त्री बरट्रांड रुस्सेल का शिक्षा के सम्बन्ध में कथन एकदम सही है ? समाज कल्याण को समर्पित इस महान व्यक्ति ने कहा था कि **"Man are born ignorant not stupid, they are made stupid by ecducation".**

स्वत: ही ध्यान आकर्षित करने वाला ये कथन इस बात का अहसास करा देता है कि शिक्षा नीति ही वैचारिक प्रक्रिया (thought process) का आधार है ।

क्या हम वर्तमान शिक्षा नीति के माध्यम से अपने युवा धन का प्रभावशाली मार्गदर्शन एवं संरक्षण कर पा रहें हैं ? क्या इस नीति के माध्यम से हम अपने देश के भविष्य को इस तथ्य से अवगत करा पा रहें कि इस देश और व्यवस्था के लिए वे (युवा) महत्वपूर्ण हैं और समाज एवं देश को उनकी आवश्यकता है ? किसी अप्रिय घटना के घटित होने के बाद संबद्ध संस्थान, प्रशासन की

जिम्मेदारियां और सम्बंधित अभिभावकों द्वारा उत्पन्न मानसिक दबाव की चर्चा करने के बाद स्थानीय मीडिया भी इस सतही आकलन से अपनी क्रियाशीलता के प्रमाण प्रस्तुत करता है और अपने कर्तव्यों के पूर्ण होने का संतोष प्राप्त कर लेता है, किन्तु वास्तविकता में ये सतही आकलन भी हमारे युवाओं के साथ अन्याय ही है । उर्जावान युवाओं की हताशा के कारणों को बिना गहराई से समझे उसका अन्मूलन/निराकरण असंभव है ।

आज के दौर में जब ज्ञान और सूचनाएं पहले से ही प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है तब प्राथमिक शिक्षा में व्यक्तित्व निर्माण का महत्व और भी बढ़ जाता है । शिक्षण क्षेत्र के सम्मानीय अग्रणियों को इस तथ्य को स्वीकारना ही होगा कि आज के विद्यार्थियों के समक्ष चुनौतियां अपेक्षाकृत ज्यादा हैं । ज्ञान और सूचनाओं के इस उपलब्ध भंडार ने विद्यार्थियों को भ्रमित अवस्था में ला पटका है ।

कल्पना करिए कि एक फुटबॉल का खिलाडी जो बॉल को नियंत्रण में रखने की विश्वस्तरीय तकनीक तो सीख लेता है, बॉल पर नियंत्रण रखते हुए विरोधी टीम को चकमा देना भी सीख लेता है, किन्तु टीम भावना के अभाव में वो साथी खिलाडियों के महत्व को नहीं स्वीकारता और बॉल उनको पास नहीं करता तब क्या ऐसा खिलाडी विजयी हो सकता है ? क्या टीम भावना और विरोधी टीम के महत्व की स्वीकृति के बिना खेल का वास्तविक आनंद प्राप्त किया जा सकता है ? आज का विद्यार्थी भी कुछ इसी तरह की परिस्थितियों का सामना करता है, ज्ञान की किसी एक विद्या में निपुण होने के लिए प्रयासरत ये युवा व्यक्तित्व निर्माण जैसी बुनियादी आवश्यकताओं से वंचित रह जाते हैं । क्या हमारे नीति निर्धारक वर्तमान शिक्षा नीति को माध्यम बनाकर प्रभावशाली ढंग से सिखा पा रहें हैं कि विभिन्नता प्रकृति का मूल स्वर है और जब आप अपनी स्वयं की तुलना किसी भी साथ करते हैं तो अप्रत्यक्ष रुप से सृष्टि के रचियता का अपमान कर डालते हैं ? क्या शिक्षण क्षेत्र से जुड़े शिक्षाकर्मियों द्वारा विद्यार्थियों की परस्पर तुलना का अपराध नहीं किया जाता ? क्या प्रतियोगी वातावरण में धकेलने से पहले हम अपने युवाओं को ये बता पा रहे हैं कि असफल होकर भी निरंतरता बनाये रखना सफलता का ही भागरुप है ?

व्यक्तित्व निर्माण की मूलभूत आवश्यकताओं की अवेहलना कर सफल होने का प्रयास बड़ा बेमानी प्रतीत होता है, और मानसिक प्रसन्नता प्राप्त करने के मार्ग में सबसे बड़ा रोड़ा भी है। ये नितांत आवश्यक है कि व्यक्तित्व निर्माण सम्बन्धी महत्वपूर्ण आवश्यकताओं को हमारी शिक्षा नीति में उचित स्थान मिले और उचित आयु में विद्यार्थियों को इसका लाभ मिल सके । जिस प्रकार शिक्षा के दूसरे सभी क्षेत्रों में पूरे विश्व में अनुसंधान कार्य किये जाते हैं, उसी प्रकार प्रसन्न मानसिक अवस्था जैसे मानव कल्याण से सीधे जुड़े विषयों पर भी निरंतर अनुसन्धान कार्य की आवश्यकता है । वर्तमान समय में लगभग सभी प्रतिष्ठित संस्थानों द्वारा मनोवैज्ञानिक सलाहकारों की नियुक्ति की जाने लगी है, किन्तु इससे भी ज्यादा आवश्यक ये है कि प्राथमिक शिक्षा में ही इन मूलभूत गुणों को योग्य स्थान दिया जाये, जो भविष्य में एक स्वच्छ एवं शक्तिशाली वैचारिक प्रक्रिया का आधार बने ।

सामान्यत: देखा जाता है कि उच्च पद पर आसीन अथवा आर्थिक रुप से समृद्ध व्यक्ति को समाज सफत व्यक्तियों की सूची में शामिल करता है, किन्तु एक प्रश्न स्वाभाविक रुप से उठता है कि क्या ये तथाकथित सफल व्यक्ति मानसिक रुप से प्रसन्न हैं? अगर ये तथाकथित सफल व्यक्ति समाज के लिए उपयोगी न हों, परार्थ चिंतन की प्रवृति विकसित करने में अक्षम हों, निस्वार्थ, निष्पक्ष निर्णय करने की योग्यता अपने अंतर में विकसित न कर पायें, तब क्या ऐसे व्यक्ति जीवन के वास्तविक सुख, आनंद और प्रसन्नता से वंचित नहीं रह जायेंगे ? वर्तमान शिक्षा नीति प्रसन्नचित मानव जीवन के महत्व एवं उपयोगिता को दरकिनार कर संकीर्ण विचारधारओं को अनावश्यक महत्व देती प्रतीत होती है । पद, पैसे, प्रतिष्ठा के स्थान पर प्रसन्नता सर्वोपरि है, क्षण भंगुर मानव जीवन मानसिक प्रसन्नता के अभाव में उद्देश्य से भटक सकता है, जबकि प्रसन्नता को यथा महत्व देने से जीवन सम्पूर्णता की ओर आने लगता है ।

सभी पाठकों के जीवन में असीम आनंद की कामना के साथ अंत में एक बार फिर कहना चाहूँगा कि आपके विचारों में प्रसन्नता की अनिवार्यता को उचित महत्व मिले तथा ईश्वर निर्मित प्रत्येक परिस्थिति आपको सहर्ष स्वीकार हो, उसका मुकाबला कर सकें, विजयी बनें एवं आपके जीवन आनंद में निरंतर वृद्धि हो । धन्यवाद ।

आखिरी पीढ़ी

कंजी कामा फाफल

जिनका जन्म 1960, 1961, 1962, 1963, 1964, 1965, 1966, 1967, 1968, 1969, 1970, 1971, 1972, 1973, 1974, 1976, 1977, 1978, 1979, 1980 में हुआ है उन्हीं के लिए यह लेख यह पीढ़ी अब 45 पार कर 65-70 की ओर बढ़ रही है । इस पीढ़ी की सबसे बड़ी सफलता यह है कि इसने ज़िंदगी में बहुत बड़े बदलाव देखे और उन्हें आत्मसात भी किया।

1, 2, 5, 10, 20, 25, 50 पैसे देखने वाली यह पीढ़ी बिना झिझक मेहमानों से पैसे ले लिया करती थी । स्याही-कलम/पेंसिल/पेन से शुरुआत कर आज यह पीढ़ी स्मार्टफोन, लैपटॉप, पीसी को बखूबी चला रही है । जिसकी बचपन में साइकिल भी एक विलसिता थी, वही पीढ़ी आज बखूबी स्कूटर और कार चलाती है। कभी चंचल तो की गंभीर....बहुत सहा और भोगा लेकिन संस्कारों में पली-बढ़ी यह पीढ़ी । टेप रिकॉर्डर, पॉकेट, ट्रांजिस्टर कभी बड़ी कमाई का प्रतीक थे । मार्कशीट और टीवी के आने से जिनका बचपन बरबाद नहीं हुआ, वही आखिरी पीढ़ी है। कुकर की रिंग्स, टायर लेकर बचपन में ''गाड़ी-गाड़ी खेलना'' इन्हें कभी छोटा नहीं लगता था । ''सलाई को ज़मीन में गाड़ते जाना'' यह भी खेल था, और मज़ेदार भी । ''कैरी (कच्चे आम) तोडना'' इनके लिए चोरी नहीं था । किसी भी वक्त किसी के भी घर की कुंडी खटखटाना गलत नहीं माना जाता था । ''दोस्त की माँ ने खाना खिला दिया'' इसमें कोई उपकार का भाव नहीं, और ''उसके पिताजी ने डांटा'' इसमें कोई ईर्ष्या भी नहीं.... यही आखिरी पीढ़ी थी ।

कक्षा में या स्कूल में अपनी बहन से भी मज़ाक में उल्टा सीधा बोल देने वाली पीढ़ी। दो दिन अगर कोई दोस्त स्कूल न आय तो स्कूल छूटते ही बस्ता लेकर उसके घर पहुँच जाने वाली पीढ़ी। किसी भी दोस्त के पिताजी स्कूल में आ जाएँ तो मित्र कहीं भी खेल रहा हो, दाँडते हुए जाकर खबर देना : ''तेरे पापा आ गए हैं, चल जल्दी'' यही उस समय की ब्रेकिंग न्यूज़ थी । लेकिन मोहल्लें में किसी भी घर में कोई कार्यक्रम हो तो बिना संकोच, बिना विधिनिषेध काम करने वाली पीढ़ी।

कपिल, सुनील गावस्कर, वेंकट, प्रसन्ना की गेंदबाजी देखी, पीट सामप्रस, भूपति, स्टेफी ग्राफ, अगासी का टेनिस देखा, राज, दलिप, धर्मेन्द्र, जितेंद्र, अमिताभ, राजेश खन्ना, आमिर, सलमान, शाहरुख, माधुरी इन सब पर फिदा रहने वाली यही पीढ़ी। पैसे मिलाकर भाड़े पर वीसीआर लाकर 4-5 फिल्में एक साथ देखने वाली पीढ़ी । लक्ष्या अशोक के विनोद पर खिलखिलाकर हँसने वाली, नाना, ओम पुरी, शबाना, स्मिता पाटिल, गोविंदा, जग्गू दादा, सोनाली जैसे कलाकारों को देखने वाली पीढ़ी। ''शिक्षक से पिटना'' - इसमें कोई बुराई नहीं थी, बस डर यह रहता था कि घरवालों को न पता चले, वरना वहाँ भी पिटाई होगी । शिक्षक पर आवाज़ ऊँची न करने वाली पीढ़ी। चाहे जितनी भी पिटाई हुई हो, दशहरे पर उन्हें सोना अर्पण करने वाली और आज भी कहीं रिटायर्ड शिक्षक दिख जाएँ तो निसंकोच झुककर प्रणाम करने वाली पीढ़ी। कॉलेज में छुट्टी हो तो यादों में सपने बुनने वाली पीढ़ी... न मोबाईल, न एसएमएस, न व्हाटसऐप...सिर्फ मिलने की आतुर प्रतीक्षा करने वाली पीढ़ी। पंकज उधास की गज़ल ''तूने पैसा बहुत कमाया, इस पैसे ने देश छुड़ाया'' सुनकर आँखें पोंछने वाली । दीवाली के पाँच दिन की कहानी जानने वाली । लिव-इन तो छोडिए, लव मैरिज भी बहुत बड़ा ''डेरिंग'' समझने वाली । स्कूल-कॉलेज में लड़कियों से बात करने वाले लडके भी एडवांस कहलाते थे । फिर से आँखें मूँदे तो...वो दस, बीस...अस्सी, नब्बे....वही सुनहरी यादें । गुज़रे दिन तो नहीं आते, लेकिन यादें हमेशा साथ रहती हैं । और यह समझने वाली समझदार पीढ़ी थी कि आज के दिन भी कल की सुनहरी यादें बनेंगे । हमारा भी एक ज़माना था... तब बालवाड़ी (प्ले स्कूल) जैसा कोई कॉन्सेप्ट ही नहीं था । 6-7 साल पूरे होने के बाद ही सीधे स्कूल भेजा जाता था । अगर स्कूल न भी जाएँ तो किसी को फर्क नहीं पडता।

न साइकिल से, न बस से भेजने का रिवाज़ था । बच्चे अकेले स्कूल जाएँ, कुछ अनहोनी होगी-ऐसा डर माता-पिता को कभी नहीं हुआ। पास/फेल यही सब चलता था । प्रतिशत (%) से हमारा कोई वास्ता नहीं था । ट्यूशन लगाना शर्मनाक माना जाता था । क्योंकि यह ''ढीठ'' कहलाता था । किताब में पत्तियाँ और मोरपंख रखकर पढ़ाई में तेज हो जाएँगे यह हमारा दृढ़ विश्वास था। कपड़े की थैली में किताबें रखना, बाद में टिन के बक्से में किताबें सजाना-यह हमारा क्रिएटिव स्किल था । हर साल नई कक्षा के लिए किताब-कॉपी पर कवर चढ़ाना-यह तो मानो वार्षिक उत्सव होता था । साल के अंत में पुरानी किताबें बेंचना और नई खरीदना हमें इसमें कभी शर्म नहीं आर्डर। दोस्त की साइकिल के डंडे पर एक बैठता, कैरियर पर दूसरा और सड़क-सड़क घूमना....यही हमारी मस्ती थी । स्कूल में सर से पिटाई खाना, पैरों के अंगूठे पकड़कर खड़ा होना, कान मरोड़कर लाल कर देना - फिर भी हमारा ''ईगो'' आडे नहीं आता था । असल में हमें ''ईगो'' का मतलब ही नहीं पता था । मार खाना तो रोज़मरां का हिस्सा था । मारने वाला और खाने वाला दोनों ही खुश रहते थे । खाने वाला इसलिए कि ''चलो, आज कल से कम पड़ा।'' मारने वाला इसलिए कि ''आज फिर मौका मिला।'' नंगे पाँव, लकड़ी की बेट और किसी भी बॉल से गली-गली क्रिकेट खेलना वही असली सुख था । हमने कभी पॉकेट मनी नहीं माँगा, और न माता-पिता ने दिया । हमारी ज़रुरतें बहुत छोटी थीं, जो परिवार पूरा कर देता था । छह महिने में एक बार मुरमुरे या फरसाण मिल जाए तो हम बेहद खुश हो जाते थे। दिवाली में लवंगी फुलझड़ी की लड़ी खोलकर एक-एक पटाखा फोडना हमें बिल्कुल भी छोटा नहीं लगता। कोई और पटाखे फोड़ रहा हो तो उसके पीछे-पीछे भागना यही हमारी मौज थी ।

हमने कभी अपने माता-पिता से यह नहीं कहा कि ''हम आपसे बहुत प्यार करते है'' क्योंकि हमें ''आई लव यू'' कहना आता ही नहीं था । आज हम जीवन में संघर्ष करते हुए दुनिया का हिस्सा बने हैं। कुछ ने वह पाया जो चाहा था । कुछ अब भी सोचते हैं - ''क्या पता...'' स्कूल के बाहर हाफ पैंट वाले गोलियों के ठेले पर दोस्तों की मेहरबानी से जो मिलता - वो कहाँ चला गया? हम दुनिया के किसी भी कोने में रहें, लेकिन सच यह है कि - हमने हकीकत में जिया और हकीकत में बड़े हुए कपड़ों में सिलवटें न आएँ, रिश्तों में औपचारिकता रहे-यह हमें कभी नहीं आया । - रोटी सब्जी के बिना डिब्बा हो सकता है-यह हमें मालूम ही नहीं था ।

हमने कभी अपनी किस्मत को दोष नहीं दिया । आज भी हम सपनों में जीते हैं, शायद वही सपने हमें जीनें की ताकत देते हैं।

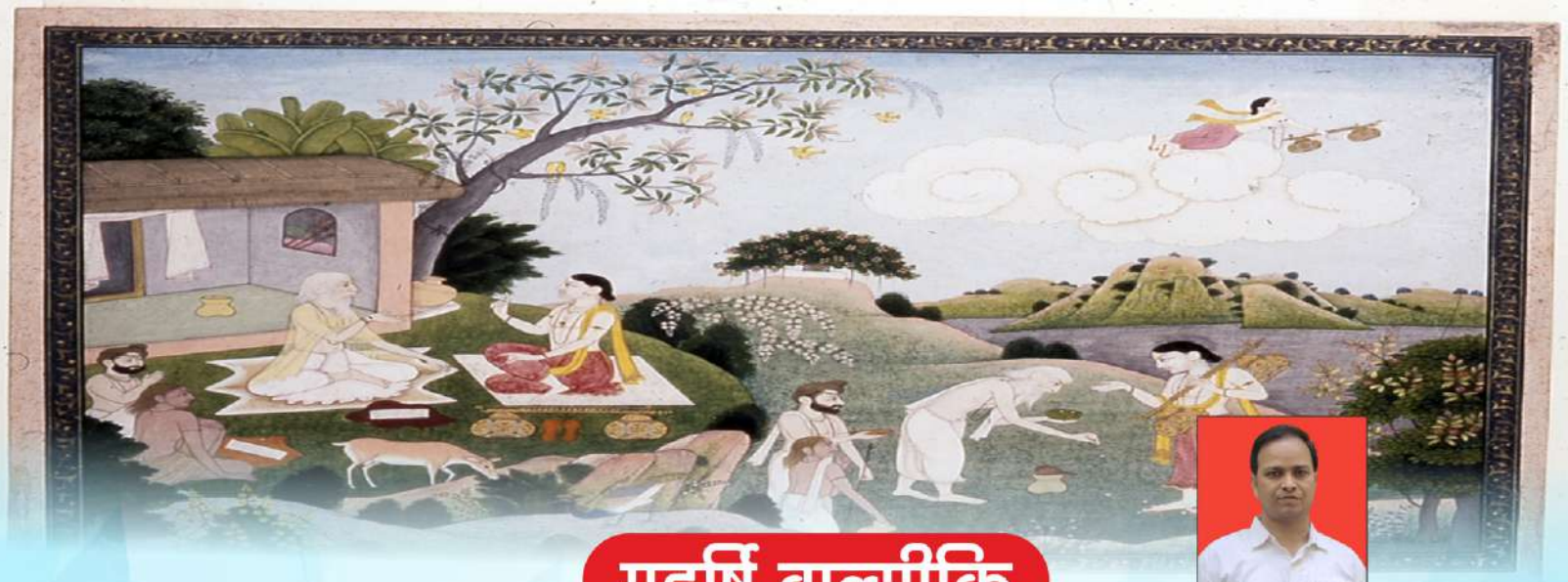

महर्षि वाल्मीकि

हसमुख कुमार
प्र. स्ना. शि. (संस्कृत)
केन्द्रीय विद्यालय इफको गांधीधाम

भारत की संस्कृति के इतिहास में महर्षि वाल्मीकि का नाम अद्वितीय और सदा अमर रहने वाला है । क्योंकि उन्हें आदिकवि कहा जाता है । उन्होंने संस्कृत भाषा का प्रथम महाकाव्य रामायण की रचना की थी । महर्षि वालमीकि ने संस्कृत साहित्य को समृद्ध ही नही किया बल्कि समाज को धर्म, मर्यादा, नीति और आदर्शो पर चलने का रास्ता दिखाया जो आज भी प्रेरणा देता है । उनके जीवन की कथा मात्र एक महाकवि के जीवन की गाथा नहीं है, बल्कि यह एक महान आध्यात्मिक और आत्म विकास की अनोखी यात्रा प्रारम्भ करने की प्रेरणा देती है।

बचपन : महर्षि वाल्मीकि के जन्म के संबंध में अनेक कहानियां बताई जाती हैं । अधिकांश विद्वानों के अनुसार उनका जन्म त्रेतायुग में हुआ था । कुछ के अनुसार वास्तविक नाम रत्नाकर था । वे मूलत: एक ब्राह्मण परिवार में जन्मे थे, लेकिन बाल्यकाल में संयोगवष वे अपने माता-पिता से बिछुड़ गए । जंगलों में भटकते हुए उनका पालन-पोषण शिकारी जाति के लोगों के बीच हुआ, जिसके कारण वे शिकार और हिंसा से जुड़ गए।

रत्नाकर का पालन-पोषण एक भील समुदाय के सरदार ने किया था । युवावस्था में वे एक निर्भीक और दक्ष शिकारी थे। उनके विवाह के बाद परिवार का पालन-पोषण करने के लिए लूटपाट करते थे। इस तरह उनका जीवन हिंसा, हत्या और लूट वाला हो गया । वे यात्रियोन को लूटते और कभी-कभी उनकी हत्या भी कर देते।

आत्मजागृति - रत्नाकर का जीवन तब बदला जब उनकी भेंट महर्षि नारद से हुई। एक दिन रत्नाकर ने नारद मुनि को लूटने का प्रयास किया। जब उन्होंने नारद को रोककर पूछा कि तुम्हारे पास क्या है, तो नारद ने शांत भाव से कहा-''हमारे पास केवल प्रभु का नाम है, इसे लूट सकते हो तो लूट लो।''

तब रत्नाकर ने उनसे कहा कि वह अपने परिवार का पालन-पोषण करने के लिए डकैती करता है। तो नारद ने उनसे पूछा-''क्या तुम्हारा परिवार इस पाप में तुम्हारा भागीदार बनेगा? क्या वे तुम्हारे पाप का फल भोगने को तैयार है?'' रत्नाकर ने उत्तर दिया कि वह नहीं जानता। नारद ने कहा-''तो जाकर अपने परिवार से पूछो।''

रत्नाकर जो डाकु था उसने घर जाकर अपनी पत्नी, माता-पिता और बच्चों से पूछा । सभी ने कहा कि केवल उसके द्वारा कमाए गए धन को खाते हैं, आपके पाप का भार हम नहीं भोगेंगे । यह सुनकर रत्नाकर के दिल को गहरी चोट लगी। उसे पहली बार एहसास हुआ कि अपने पापों का फल अकेले भोगना होगा।

वे पुन: नारद मुनि के पास आए और उनके चरणों में गिर पड़े । नारद ने उन्हें ईश्वर का नाम जपने की बात बताई। चूँकि रत्नाकर के लिए तुरंत ''राम'' नाम का उच्चारण करना कठिन था, इसलिए नारद ने उन्हें ''मरा मरा'' जपने को कहा। जपते-जपते वह ''राम-राम'' में बदल गया।

तपस्या और वाल्मीकि - रत्नाकर डाकु ने घने जंगल में लंबे समय तक ध्यान और तपस्या की। कहा जाता है कि उनकी साधना इतनी गहरी थी कि उनके चारों ओर दीमकों (वल्मीक) का मिट्टी का टीला बन गया। वर्षो बाद जब उनकी साधना पूर्ण हुई और नारद ने उन्हें जगाया, तो उनका शरीर दीमकों के टीले से ढका हुआ था। इसी कारण उनका नाम-वाल्मीकि (जिसका अर्थ है: वल्मीक अर्थात दीमक के ढेर से उत्पन्न) पडा।

यह घटना आत्मा के गहरे मन की शुद्धि और आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्ति का प्रतीक थी। जो रत्नाकर डाकु से अब वाल्मीकि बन चुके थे - एक डाकू से वाल्मीकि बनने की यह यात्रा भारत के आध्यात्मिक परंपरा की महान से महानतम कथाओं में से एक है।

ज्ञान प्राप्ति व आश्रम कि दिनचर्या - वाल्मीकि ने महर्षि नारद और ब्रह्मा जी से वेद, उपनिषद् और धर्मशास्त्र का गहन

अध्ययन किया । उन्होंने अपना सारा जीवन समाज सेवा, शिक्षा और धर्म के प्रचार में समर्पित कर दिया। उन्होंने गंगा के किनारे एक आश्रम की स्थापना की। इसी आश्रम में रामायण तथा महान कार्यो को किया।

वाल्मीकि ऋषि का आश्रम ज्ञान, तप और धर्म का मुख्य केंद्र बन गया । यहाँ अनेक शिष्य धर्म, नीति और संस्कार सीखने के लिए आते थे । वाल्मीकि का जीवन उस समय के लिए एक आदर्श था कि कोई भी व्यक्ति अपने कर्मो के द्वारा अपना भविष्य बदल सकता है।

रामायण – महर्षि वाल्मीकि के जीवन की सबसे महान रचना रामायण है । एक दिन वाल्मीकि अपने शिष्य भारद्वाज के साथ तमसा नदी के किनारे विचरण कर रहे थे । तब उन्होंने देखा कि एक क्रौंच पक्षी का जोड़ा प्रेम से रति क्रीड़ा कर रहा है । तभी एक शिकारी ने उनमें से नर पक्षी को मार डाला । मादा क्रौंच के कन्दन को सुनकर वालमीकि के हदय में करुणा उमड़ आयी और उनके मुख से अचानक ही एक श्लोक फूट पडा –

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः ।
यत्क्रौंचमिथुनादेकमवधीः काममोहितम् ।।

जिसका अर्थ है – हे निषाद! तूने प्रेम में मग्न क्रौंच का वध किया है, इसलिए तुझे कभी स्थायी प्रतिष्ठा न मिले ।

यह श्लोक संस्कृत काव्य में प्रथम श्लोक के रुप में माना जाता है । इसी से संस्कृत छंदबद्ध काव्य के रीति प्रारंभ हुई और महर्षि वाल्मीकि को आदिकवि के रूप में मान्यता प्राप्त हुई । उसी समय ब्रह्माजी प्रकट हुए और वाल्मीकि को उपदेश दिया कि वे श्री विष्णु के मानव रुप श्रीराम के जीवन की कथा को महाकाव्य के रूप में लिखकर लोक में प्रचारित करें । ब्रह्माजी ने महर्षि वाल्मीकि को यह वरदान दिया कि वे जो लिखेंगे, वह सत्य होगा और युगों-युगों तक अजर-अमर रहेगा ।

महर्षि वाल्मीकि ने अपनी अद्भुत काव्य-प्रतिभा से श्रीविष्णु के मानव रूप श्रीराम के जीवन चरित्र को रामायण जैसे महाकाव्य के रूप में संसार के सामने प्रस्तुत किया । जिसमें लगभग 24,000 श्लोक है जो गायत्री मंत्र के 24 अक्षरों से एक-एक अक्षर से एक हजार श्लोक है, और यह रामायण सात कांडों में राम के आदर्श जीवन, मर्यादा और धर्म का वर्णन है। यह केवल एक रामायण की कहानी नहीं बल्कि एक आदर्श जीवन जीने की कला व दर्शन है।

रामायण का महत्व : रामयण केवल धार्मिक हिन्दु ग्रंथ ही नहीं, बल्कि संसार में फैला हुआ एक अलौकिक ज्ञान, सामाजिक-जीवन, नैतिक-शिक्षा और सांस्कृतिक ग्रंथ भी है । रामायण को एक आदर्श पुत्र, भाई, पति, मित्र और राजा के गुणों का प्रतिपादन में किया गया है । यह काव्य भारत के हर युग में क्या युगों-युगों तक प्रेरणा का स्त्रोत रहेगा । महर्षि वाल्मीकि रामायण के माध्यम से लोगों में यह संदेश देते हैं कि धर्म और मर्यादा का पालन करके ही जीवन को सफल, सुखी और समाज को संतुलित बनाया जा सकता है।

महर्षि वाल्मीकि की करुणा और मानवीय संवदेनाओं की झलक-महर्षि वाल्मीकि लेखनी तक सीमित नहीं रही, उन्होनें भगवान श्रीराम की भार्या सीता जब अयोध्या से वनवास लेकर वन में आई, तब महर्षि वाल्मीकि के आश्रम में शरण ली । यहीं पर सीताजी ने श्रीराम के दोनों पुत्रो को वेद, शास्त्र और युद्धकला, युद्ध नीति तथा रामायण गान की शिक्षा दी। उस शिक्षा के द्वारा महर्षि वाल्मीकि ने लव-कुश के माध्यम से रामायण का गान कराया।

यह घटना महर्षि वाल्मीकि की करुणा और मानवीय संवेदनाओं का प्रमाण है । उन्होंने समाज से तिरस्कृत नारी सीताजी को सम्मान और सुरक्षा प्रदान करवाई ।

महर्षि वाल्मीकि की शिक्षाएँ –

1. व्यक्ति कितना भी पापी क्यों न हो, यदि वह सच्चे मन से प्रयास करे तो अपने जीवन को बदल सकता है।

2. रामायण का आचरण सखिाता है। हमें सत्यता, करुणा और मर्यादा का पालन करना सिखाते है।

3. रामायण के माध्यम से सिद्ध किया कि साहित्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि समाज को दिशा देने वाला दर्पण है।

4. स्त्री सम्मान व कठोर जीवन – सीता को आश्रय देकर उन्होंने समाज में स्त्री के सम्मान और अधिकारों को महत्व तथा स्त्री के जीवन में आने वाली कठिन परिस्थितियों को संसार में उजागर किया।

व्यक्तित्व – ये कवि नहीं, बल्कि दार्शनिक, शिक्षक, समाज-सुधारक और तपस्वी थे । उनका व्यक्तित्व करुणा, विनम्रता और आध्यात्मिक तेज से भरा हुआ था । वे मानते थे कि मनुष्य आत्मज्ञान और तपस्या से ही अपने भीतर छिपे ईश्वर के स्वरूप को पहचान सकता है ।

महर्षि वाल्मीकि का साहित्यिक योगदान – रामायण के अलावा योगवसिष्ठ एक दार्शनिक ग्रंथ है जो आत्मज्ञान और मोक्ष का मार्ग दिखाता है । यह ग्रंथ वेदांत दर्शन का महत्वपूर्ण आधार स्तंभ है।

मृत्यु और धोरहर – महर्षि वाल्मीकि के अंत समय के बारे में स्पष्ट ऐतिहासिक तथ्य नहीं हैं। किंतु माना याता है कि उन्होंने अपने जीवन के अंतिम क्षण तक तप, साधना और शिक्षा का कार्य सतत रखा था।

उनकी शिक्षाएं केवल ग्रंथों में ही नहीं, बल्कि भारत की सांस्कृतिक, आध्यात्मिक चेतना में आज भी जीवित है। आज भी देश के अनेक हिस्सों में वाल्मीकि जयंति बड़े उत्साह से मनाई जाती है। उनको लोग समाज के प्रेरणास्त्रोत के रुप में पदस्थापित करते है।

महर्षि वाल्मीकि का जीवन इस बात का प्रमाण है कि कोई भी व्यक्ति जन्म या परिस्थितियों से महान या छोटा (तुच्छ) नहीं होता । महानता तो अपने कर्मो, ज्ञान, आत्मबोध और समाज में दिये गए योगदान से आती है । एक डाकू रत्नाकर से महर्षि वाल्मीकि बनने की यात्रा व्यक्ति के लिए जीवन में प्रेरणा का स्त्रोत है । जो अपने जीवन को पाप, अज्ञान और अधर्म से बदलकर धर्म, ज्ञान, पुण्य और करुणा की ओर आगे प्रगति करना चाहते हो उनको रामायण महाकाव्य को कम से कम अपने जीवन में एक-दो बार अवश्य पढ़ना चाहिए।

रामायण की रचना करके महर्षि वाल्मीकि ने न केवल भारत के संस्कृत साहित्य को अमर रचना दी बल्कि पूरी मानव जाति को जीवन जीने की कला का उच्चतम पंथ प्रदान किया । महर्षि वाल्मीकि का जीवन और रचना आज भी उतनी ही प्रासंगिक और प्रेरणादायी है जितनी हजारों वर्षो से चली आ रही हैं ।

अनाथाश्रम

'जिसका कोई नहीं उसका तो खुदा है यारों,
मैं नही कहता, किताबों में लिख हैं यारों ।

नरेश सोनारीवाल
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक (बाह्य स्त्रोत)
वी.टी.एस. निदेशालय, गांधीधाम

मित्रों मैं बात कर रहा हूँ उन अनाथ बच्चों की जिनका इस दुनिया में भगवान के अलावा और कोई नहीं होता। अनाथ का मतलब भी तो आखिर यही है जिसका 'कोई नाथ नहीं, वह अनाथ'।

पूरे विश्व में ऐसे कितने ही बच्चें हैं जिनके परिवार का कोई अता-पता नहीं । मुझे तो अफसोस होता है समाज के उन लोगों पर जो निर्दोष और मासूम बच्चों को सड़क पर अकेला या कचरे के डिब्बे में खुला छोड़ जाते हैं, मरने एवं गलियाँ और दर-दर की ठोकरें खाने के लिये । हम सिर्फ कल्पना करें कि हमें यदि कोई अपशब्द कहे, बेइज्जत करे तो कितना बुरा लगता है और यदि जिंदगी रोज ऐसा ही अनुभव दे तो ? हर जगह ठोकरें, खाने में जूठ्ठन और सुनने में माँ की लोरियों की जगह गालियाँ । एक अनाथ के भाग्य की कैसी विडम्बना होती है कि जब उसकी आँख खुलती है तब न माँ की गोद मिलती है, न पिता का साया होता है, मिलती है तो बस भूख, बेबसी, लाचारी और सड़क की ठोकरें । इसे तो बस वो बच्चा ही जाने जिसने बिन माँ के बचपन गुज़ारा हो, जिसे इस ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' कहे जाने वाले विशाल विश्व में विशाल विश्व में किसी ने अपनाया हो । उन बच्चों के लिये जिंदगी भी अपनी नहीं होती, यदि हम महसूस करें तो पाऐंगे कि इनके लिये हर रंग बेरंग होता है। मुझे ऐसो बच्चों की जिंदगी पर एक शायर का शेर याद आता है –

'जब भी मिलती है मुझे अजनबी सी लगती क्यूं है?
ये जिंदगी रोज़ नये रंग बदलती क्यूं है?'

हम एक पल के लिये अपना बचपन याद करें कि – जब हमारी माँ हमसे एक क्षण के लिये भी दूर हो जाती थी तो किस तरह आँखों में आँसू आते थे । किन्तु उन बच्चों का क्या जिनके पास तो ठीक, मगर दूर होने के लिये भी माँ नहीं है।

कहा जाता है कि जब बच्चा पैदा होता है तो वह पहला अक्षर माँ बोलना सीखता है पर उस बच्चें की क्या जिंदगी जिसे माँ बोलना सिखाने वाला भी कोई नही हो। यदि हम रुठ जाते थे बचपन में तो माँ हमें मनाकर खाना खिलाती थी या पापा से रुठकर हम अपनी फरमाइशों को पूरा करवा लिया करते थे । लेकिन वो अनाथ बच्चें जिनके भाग्य की परीक्षा है कि न उनके पास रुठने पर मनाने वाली माँ है और न ही फरमाइशों को पूरा करने वाले पिता । यदि मैं ऐसे बच्चों के दुख और तकलीफों पर अपने शब्दों में कुछ लिखना चाहूँ तो– (एक अनाथ बच्चे के शब्दों में –)

पैरों तले ज़मीन, सर पर आस्मा नहीं है ।
मैं वो बदनसीब हूँ, जिसके पास माँ नहीं है।
कितना शोरोगुल है शहर में, कितनी शहनाईयाँ है।
बस मुझे लोरी सुनाने के लिये ही, कोई जुबान नहीं हैं ।
मै वो बदनसीब हूँ, जिसके पास माँ नहीं है।

आंखे तो हैं मगर, सपनों का जहाँ नहीं हैं।
मेरा कोई वजूद, मेरा कोई निशाँ नहीं है।

मैं वो बदनसीब हूँ, जिसे पास माँ नहीं है।
नींद है मगर, बिस्तर का ठिकाना नहीं है।
सोने को सड़क तो है, पर जागने को मकाँ नहीं है।
मैं वो बदनसीब हूँ, जिसका कोई जहाँ नहीं है।

खेलने को भाई बहन नहीं हैं, प्यार से खिलाने वाली माँ नहीं है।
दादी-नानी की कहानियाँ नहीं हैं, गलती पर डाँटने वाले पिता नहीं है।

मैं वो बदनसीब हूँ, जिसके पास माँ नहीं है ।
खाने के लिये गालियाँ हैं, मिलने के लिये दुआ नहीं है।
पहनने को नये कपड़े नही हैं, परिवार क्या है पता नहीं है।
मैं वो बदनसीब हूँ, जिसका कोई आशियाँ नहीं है।

खिलौनो के खेल नहीं हैं, बचपन बाल मजदूरी है।
माँ-बाप का सिर पर हाथ नहीं है, ख्वाहिशें अधूरी है।

संघर्ष ही मेरा जीवन है, कहने को कोई अपना नहीं है।
मैं वो बदनसीब हूँ, जिसके पास माँ नही है ।

मित्रों कुछ पल के लिये हम इन बच्चों की जगह जी कर देखें तो समझ पाएंगे उन अनाथ बच्चों की पीड़ा जो बिना गलती के भीड़ में तन्हा छोड़ दिये जाते हैं । एक बात कड़वी है, किन्तु सच है जिनके पास माँ-बाप हैं वे उन्हें वृद्धाश्रम भेज देते हैं और जिनके पास माता-पिता नहीं है वे जीवन भर उनके प्रेम को तरसते हैं, यूँ भी किसी वस्तु या व्यक्ति की कमी हमें तब महसूस होती है जब वो हमारे पास न हो ।

मैं यहाँ ऐसे बच्चों की मनोदशा व्यक्त करने का प्रयास कर रहा हूँ जिनके जीवन में भूख हो तो रोटी की तलाश, नींद हो तो बिस्तर की तलाश । हर रात, हर दिन अपनी जरुरतें पूरी करने के लिये कितना संघर्ष, मेरे मतानुसार आप जितना संघर्ष बुढ़ापे तक करते हैं, उससे कहीं ज्यादा संघर्ष एक अनाथ बच्चा बचपन में ही कर चुका होता है ।

आइये कुछ दृश्य देखें और उन्हें महसूस भी करें !

यदि ऐसे बच्चों के सामने कोई माँ अपने बच्चे को खाना खिला रही हो या अपने बच्चे से प्यार कर रही हो ती उस बच्चे की मनोदशा क्या होगी ? जिसने जीवन में माँ का प्यार कभी न पाया हो। हम सिर्फ कल्पना करें यदि कोई अनाथ बच्चा कहीं सफर कर रहा हो और भीड़ में से कोई उस अनाथ बच्चे से उसके पिता का नाम पूछ लिया तो ? क्या बीतेगी उस बच्चे पर जिसे इतना भी पता नहीं कि उसके माता-पिता कौन है ? या अचानक कोई फॉर्म भरते हुए उस बच्चे के सामने यह प्रश्न आ जाए जिसमें उसे माता-पिता का नाम भरना हो तो ? न चाहते हुए भी उस बच्चे की आँख भर आएगी, अनायास उसके मुंह से माँ शब्द निकल पड़ेगा ।

किसी का बेटा या बेटी कहलाना जितना सरल है, उससे कहीं कठिन है जीवन भर अनाथ कहलाना। अनाथ वह है जिसे इतना तक पता नहीं होता कि - माँ की गोद क्या होती है ? वह बचपन के कोमल क्षणों को भी कठोरता से जीता है । जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप तो यह है कि एक अनाथ बच्चे को नाम भी आधा-अधूरा मिलता है न तो पिता का नाम, न ही कोई उपनाम (Surname)।

जीवन बड़ा विचित्र है मित्रों कोई बच्चे के लिये तरसता है, तो कोई माँ बाप के लिये । बिन बच्चे के जीने में भी उतना संघर्ष नहीं, जितना संघर्ष बिना माता-पिता के जीने में है। एक बाँझ औरत बच्चे को गोद ले सकती है पर क्या कोई अनाथ बच्चा माँ को आसानी से पा सकता है ? ये बाते पढ़ते वक्त जरुर सोचना कि क्या सच में हमें उन बच्चों का भी विचार है? कहीं हम उन्हें नकार तो नहीं रहे ? यदि नहीं, तो क्यों हम उन नन्हें बच्चों के प्रति खुलकर आत्मीयता व्यक्त नहीं करते ? जिस प्रेम के वे हकदार हैं ।

हम अपने बच्चों को बचपन से ही सपने देते हैन कि बड़ा होकर उसे क्या बनना है? पर ऐसे अनाथ बच्चों के पास न तो सपने हैं और न ही जीवन का कोई बड़ा लक्ष्य, ये जी रहे हैं यही बड़ी बात हैं क्यों कि इनके पास जीने का कोई उद्देश्य तक नहीं होता, बस खुद का पालन-पोषण खुद को करना यही इनका जीवन है । यदि मैं इनके जीवन को संक्षेप में व्यक्त करुँ तो इतना ही कह पाऊँगा-

उसके पास जीने का कोई बहाना नही था, क्यों कि इतनी बड़ी दुनिया में उसका कोई आशियाना नहीं था ।
छुप-छुप कर रोना था, मगर दर्द किसी को बताना नहीं था, किससे कहता ? उसका कोई अपना या बैगाना नहीं था ।
पेट में भूख तो थी मगर, खाने को भर पेट खाना नहीं था । नए कपड़े नहीं थे, कोई त्योहार मनाना नहीं था ।
क्यों कि इतनी बड़ी दुनिया में उसका कोई आशियाना नहीं था ।

लिखना तो बहुत है पर मुझे लगता है कि इन बच्चों के लिए आप खुद विचार करें, उन्हें अपनाये, उनका सहारा बनें।

आइये हम प्रण करें कि हमारे आसपास कोई अनाथ न रहे । हम अपनी हर दीवाली, हर ईद और हर क्रिसमस इन्हीं बच्चों के साथ मनाएं । कुछ पतंगे, कुछ पटाखे या नए कपड़े अपने बच्चों के साथ-साथ इनके लिए भी खरीदें । क्यों न हम त्याहारों पर होने वाले, शादियों में होने वाले ध्यर्थ खर्च कम करके अनाथालय में वही पैसे इन बच्चों के नाम कर दें ।

अंत में इतना ही निवेदन है उपरोक्त सभी बातों पर विचार करना अवश्य करना ।

मेरी यादों के झरोखे से - कैलाश मानसरोवर यात्रा

विकास जोशी
अपर आयुक्त
केंद्रीय सीजीएसटी, कच्छ

मैने वर्ष 2023 में माउंट कैलाश मानसरोवर यात्रा की । मेरी यात्रा को बारह वर्ष हो चुके है, लेकिन अभी भी इसकी छाप आज भी उतनी ही ताजी है । क्या आपके साथ कभी ऐसा हुआ है कि आपने अवचेतन रुप से कुछ सोचा हो और वह सच हो गया हो, और आपको इसका एहसास भी न हो । सच कहूँ तो, महाकाय कैलाश के बारे में सोचकर आज भी मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं, खासकर तब जब मैंने कभी नहीं सोचा था कि मैं अपने जीवन में ऐसा कर पाऊँगा। मुझे अभी भी यह स्वीकार करना बाकी है कि मैं 14 दिन एक ऐसे रास्ते पर बिता सकता हूँ, जिसकी मैंने कभी कल्पना भी नहीं की होगी

कैलाश जाने की मेरी यात्रा सितंबर 2013 में शुरु हुई, दिल्ली से नेपाल के लिए उड़ान भरने के बाद, हम नेपाल में उतरे और किसी होटल में आराम किया । नेपाल में पशुपतिनाथ मंदिर परिसर और ललित कलाओं के एक प्राचीन शहर पाटन का दौरा करने के बाद सभी महत्वपूर्ण चीजें एकत्र करने और चीनी सरकार से अनुमति प्राप्त करने के बाद हमने अपनी यात्रा शुरु की।

हम नेपाल के सीमावर्ती शहर तिमुरे गए, जहाँ हिमालय की हरी-भरी हरियाली में छोटे-छोटे गाँव और बस्तियाँ बसी हुई है । हम आगे की ओर ड्राइव करने से पहले इमिग्रेशन पूरा करते हैं, जिसे ''खुशी की घाटी'' के रूप में वर्णित किया गया है। तिब्बत की मनमोहक सुंदरता, विस्मयकारी परिदृश्य और आसपास के पहाड़ों के बदलते रंग और रंग को देखना हमारी आँखों के लिए एक दावत थी, क्योंकि हम सागा शहर की ओर ड्राइव कर रहे थे ।

मानसरोवर झील की अपनी यात्रा जारी रखने से पहले हम ऊँचाई के अनुकूल होने के लिए यहाँ एक अतिरिक्त रात रुके । मानसरोवर झील के रास्ते में हमने अविश्वसनीय रेत के टीलों, बर्फ से ढके पहाड़ों और शांत झीलों का अनुभव किया । दुनिया में मीठे पानी का सबसे ऊँचा स्रोत, यह नीली और पन्ना-हरे रंग की झील वास्तव में एक अलौकिक नज़ारा प्रस्तुत करती है । ध्यान और आह्वान के एक रहस्यमय दिन में हमने मानसरोवर झील के पानी से एक ताज़ा खान का अनुभव किया, जिसे पवित्रता का प्रतीक माना जाता है। ऐसा कहा जाता है कि इस झील के पानी में उपचार के गुण

होते है और साथ ही किसी के कर्मो को भंग करने की शक्ति भी होती है। हमने बर्फ के ठंडे पानी में डुबकी लगाई और ज़मीन की सतह को छूना और झील की प्राकृतिक सुंदरता और आसमान के विभिन्न मिजाज़ो का अनुभव करना सार्थक था ।

अपनी यात्रा के दौरान हमें विशाल काले याक मिले, स्थानीय लोगों ने हमे याक का दूध दिया, जो खट्टा और नमकीन था और जिसे पीना मुश्किल था, लेकिन हमने खुशी-खुशी उसका सेवन किया।

जंगली कुत्ते हम सभी के लिए चिंता का विषय थे, क्योंकि वे काफी उग्र और मजबूत लग रहे थे । प्रबंधन ने हमें ऐसी स्थितियों से निपटने के लिए बहुत अच्छी तरह से मार्गदर्शन किया। बारिश और कम तापमान के कारण, ऑक्सीजन का स्तर कम हो गया और चूंकि हम सभी अपने पड़ाव पर पहुँचने के लिए जल्दी कर रहे थे इसलिए मुझे साँस लेने में तकलीफ़ हो रही थी। तभी मुझे एहसास हुआ कि मैं शारीरिक शक्ति के साथ आगे नहीं बढ़ सकता और यहीं पर मैंने रुककर खुद से कहा कि मैं यह कर सकता हूँ। आखिरी बात जो मुझे याद है वह यह है - ट्रेक के आखिरी घंटे में, मै सचमुच एक पगडंडी पर दौड़ रहा था, जबकि दूसरे लोग चलने के लिए भी संघर्ष कर रहे थे और यह सब खुद से कह रहा था कि मैं यह कर सकता हूँ।

अंतत: मैं एक ऐसे मार्ग के लिए तैयार हो गया जो जितना चुनौतीपूर्ण था उतना ही पुरस्कृत भी है। सामान पैक किया और दिरापुक के लिए चल पड़ा। जैसे-जैसे हम कैलाश पर्वत के करीब पहुँचे, हमने इस पूजनीय पर्वत की शक्तिशाली और अवर्णनीय घटना का अनुभव किया। सिकी तलहटी में रात बिताते हुए, गूढ़ कैलाश पर्वत की सुंदरता और विशालता और इसके विभिन्न भावों का आनंद लिया।

अब यह कुछ ऐसा है जिसे शब्दों में समझाना या व्यक्त करना कठिन है क्योंकि यह आपकी व्यक्तिगत भावनाओं और अनुभव से अधिक है। कैलाश पर्वत को देखते ही मेरे मन में हजारों भावनाएँ उठीं । खराब मौसम के कारण हम परिक्रमा के लिए नहीं जा सके ।

भले ही आप खुद सर्वश्रेष्ठ हों । आप फिट और स्वस्थ हों, इसकी कोई गारंटी नहीं है कि आप कैलाश की परिक्रमा पूरी कर पाएंगे । सबसे अच्छे आकार के लोग भी यह परिक्रमा पूरी नहीं कर पाए हैं और ऐसा भी हुआ है कि एक सामान्य व्यक्ति ने इसे पूरा किया है । मैंने चारों ओर देखा और मानवता देखी, जहाँ लोग नि:स्वार्थ भाव से एक-दूसरे की सेवा और देखभाल करते हैं। कुल मिलाकर, मुझे नहीं पता कि कैलाश पार्वत के आस-पास की जादुई आभा ने कई लोगों के जीवन को बदल दिया है । वे कहते हैं कि कई संत कैलाश पर्वत पर आते हैं और चुपचाप ध्यान करते हैं, जिससे यहाँ सकारात्मक ऊर्जा बढ़ती है। और जैसा कि मैं अभी भी प्रार्थना करता हूँ कि कैलाश पर्वत मुझे एक बार फिर बुलाए-मैं बस एक बात कहना चाहता हूँ कि कल कभी नहीं होता। ईमानदारी से कहूँ तो, मुझे लगता है कि जब आप युवा होते हैं तो आपका शरीर यहाँ की ऊँचाई के हिसाब से बहेतर तरीके से ढल जाता है, क्योनकि यह उबड़-खाबड़ है। साथ ही यह ऐसा इलाका है जिसका आप वास्तव में आनंद लेना चाहेंगे बजाय इसके कि साँस लेने के लिए संघर्ष करना पड़े । अपनी बाधा को तोड़ें । चीजों को देखने का अपना नज़रिया बदलें । आप कभी नहीं जानते कि कौन सा अवसर आपको बदल दे ।

जीवन की महत्ता

देवेश सिंह पटेल
अधीक्षक, लेखा परीक्षा अनुभाग,
मुख्यालय केन्द्रीय वस्तु एवं सेवाकर,
कच्छ आयुक्तालय गांधीधाम

आज के इस दौर में सभी लोग भौतिकता की दौड़ में लगे हुए हैं । उन्हें अपने खुद के लिए समय ही नहीं है । ज्यादातर लोग स्वयं से ज्यादा दूसरे के जीवन से प्रभावित है । उनके जीवन को जीने का पैमाना दूसरों पर निर्भर करने लगा है । हमें इस बात से ज़्यादा फ़र्क पड़ता है कि दूसरा हमारे बारे में क्या सोच रहा है, दूसरे का जीवन मुझसे अच्छा क्यों है, मुझे ही ज़्यादा तकलीफें क्यों हैं इत्यादि, इसी सोच और चिंता में ज़्यादातर लोगों का जीवन व्यतीत हो रहा है और हम इस अनमोल जीवन का महत्व नहीं समझ पाते हैं । और जब हमें जीवन का महत्व समझ आता है तब हम इसका निवारण बाहर खोजते हैं, या तो अच्छे अच्छे वक्तव्यों को सुनेंगे या कहीं अच्छी धार्मिक जगह समय व्यतीत करने जाएंगे, परंतु ये सब स्थायी निवारण नहीं हैं, इनसे हम क्षणिक लाभांवित तो हो सकते हैं पर रुपांतरित नहीं हो सकते ।

हमें आज के समय में ज़रुरत है आंतरिक परिवर्तन की जो हमें स्थायी निवारण प्रदान कर सर्के, आनरिक परिवर्तन के लिए हमें बहुत साहस की आवश्यकता होती है, क्योंकि अपनी गलतियों को पहचानना और स्वीकार करना मुश्किल कार्य है । हम दूसरों में कई गलतियां निकाल सकते हैं लेकिन स्वयं की गलतियों को पहचान कर स्वीकार करना और उसमें परिवर्तन लाना आसान नहीं है और यदि हम ऐसा कर पाते हैं तो यह हमारी आंतरिक यात्रा की ओर सबसे बड़ा और साहसिक कदम होगा, जिसके लिए हमें स्वयं को जानना होगा इसके लिए हमें अपने साथ कुछ समय व्यतीत करने की आवश्यकता है ताकि हम जान सकें कि हमारी मन: स्थिति क्या है।

आज हमारा मन बाहरी प्रभावों से इतना ग्रसित हो गया है कि हम उचित निर्णय नहीं ले पाते । उचित व्यवहार नहीं कर पाते, जैसे हम धूल भरी आँधी में स्पष्ट नहीं देख सकते हैं, उसके लिए धूल कणों का शांत होकर नीचे बैठना ज़रुरी है और जिस प्रकार कंप्यूटर की स्पीड को अस्थायी (Temporary) फाइल्स धीमी कर देती है और कंप्यूटर कमांड के अनुसार कार्य नहीं कर पाता, इस स्थिति में जरुरत होती है अस्थायी फाइल्स को क्लीन करने की । तो इसी प्रकार हमारा मन भी रोज़ रोज़ के विचारो से, एक दूसरे से हुए वार्तालाप से उत्पन्न द्वेष, क्रोध, लालच, पूर्वाग्रह और कई ऐसी भावनाओं से भर जाता है जिससे हमारी सोच प्रभावित हो जाती है । हमें अगर संतुलित और सरल जीवन जीना है तो इन प्रभावों के छुटकारा पाना होगा । इसका अर्थ ये कदापि नहीं है कि हमें अपने व्यवसाय या अध्ययन से संबंधित कार्य नहीं करने हैं, बल्कि इसका अर्थ यह है कि हमें इस दौरान व्यर्थ की बातों के दुष्प्रभावों से अप्रभावित रहने का प्रयास करना है, इसके लिए हमें हमारे Workplace को Worship Place मानकर कार्य करना सीखना

होगा ।

इसके साथ ही हमें हमारी हदय की आवाज़ को सुनना सीखना होगा क्योंकि हमारा मन एक एसा यन्त्र है जो आस पास के वातावरण एवं माहौल से प्रभावित विचारों को प्रस्तुत करता है, जबकि हदय अवश्य ही सही निर्देश देता है, बस हम उसको नज़रअंदाज कर देते हैं। कोई भी घटना घटित होने पर हम तुरंत प्रतिक्रिया करते हैं, जो कि तत्कालीन विचारों के प्रवाह से निर्देशित होती है और वास्तविक नहीं होती । अगर हम थोड़ा शाति से, दिल से उस घटना के बारे में विचार करें तो हमारी प्रतिक्रिया वास्तविकता के नज़दीक होगी और हम सही निर्णय ले पाएंगे । यही अंतर होता है React और Respond में ।

इसी प्रकार हमारी जीवन में विचारो की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका है, विचार ही जीवन को दिशा प्रदान करते हैं । अगर हम अच्छे विचारों को ग्रहण एवं प्रेषित करते हैं तो निश्चित ही उसका प्रभाव हमारी जीवन पर पडता है । आप सामने वाले से वही प्राप्त करते हैं जो आप उसको प्रेषित करते हैं, क्योकि प्रतिक्रिया प्रेषित विचारों का प्रतिबिम्ब होती है । अगर हम प्रेम पूर्ण व्यवहार करेंगे तो प्रतिक्रिया भी उसी अनुसार ही प्राप्त होगी । यह सत्य है कि सभी को शांति और प्रेम की पसंद है बस हम उस अभिव्यक्ति को उजागर नहीं होने देते । दूसरों की नकारात्मकता का समाधान उनकी गलतियाँ देखना नहीं बल्कि उनके प्रति अपना व्यवहार सकारात्मक रखना है। हमें अपने आपको हर परिस्थिति का सामना करने के लिए आंतरिक रुप से सुदृढ़ बनाना है । जिस प्रकार एक विशाल वृक्ष अपनी मजबूत जड़ो की वजह से बड़े से बड़े तूफ़ान का सामना कर सकता है, उसी प्रकार हमें भी अपनी जड़ें मज़बूत करने की आवश्यकता है, जिसके लिए आंतरिक शांति की आवश्यकता है, ताकि हमारे विचारों में शुद्धता हो, हमारी सोच सकारात्मक हो और और हम नकारात्मकता से अप्रभावित रह सकें। हमारा दूसरों के प्रति व्यवहार, पूर्वाग्रह एवं दूसरों की राय से प्रभावित नहीं होना चाहिए क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति के लिए सभी के नज़रिए उनकी स्वयं की सोच और परिस्थिति के अनुसार होते हैं ।

सारांश में ये कहा जा सकता है कि हमें जीवन कि महत्ता को समझ कर भौतिक और आध्यात्मिक दोनों पहलुओं को बराबर महता देते हुए एक संतुलित एवं सरल जीवन जीने का प्रयास करना चाहिए । इसके लिए हम ध्यान द्वारा अपनी आंतरिक यात्रा की शुरुआत करके अपनी भीतर कई गुणों को विकसित कर सकते हैं जो कि हमें व्यस्ततम जीवन शैली होने के बावजूद एक शांत मन, स्वस्थ शरीर और खुशहाल जीवन जीने में मददरुप होता है ।

वैसे तो जीवन में सकारात्मकता का विषय इतना विशाल है कि उसे चंद शब्दों में समेटा नहीं जा सकता, फिर भी निम्न कुछ बातों का अनुसरण हमारे जीवन को सकारात्मकता की ओर ले जा सकता है :

- किसी भी परिस्थिति में React की जगह Respond करना सीखें ।
- अपनी आंतरिक स्थिति को मज़बूत बनाएँ ताकि कोई भी परिस्थिति आपको विचलित न कर सके ।
- उचित निर्णय लेने के लिए हदय और मन के बीच एक तारतम्य स्थापित करें और हदय के निर्देश पहचानने का प्रयास करें ।
- किसी का भी मजाक ना उड़ायें दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करें जैसा आप स्वयं अपने लिए चाहते हैं ।
- किसी के प्रति व्यवहार पूर्वाग्रह से ग्रसित नहीं होना चाहिए और साथ ही दूसरों की राय पर निर्भर भी नहीं होना चाहिए ।
- किसी भी असहज परिस्थिति में दूसरों की गलतियों पर जोर देने से पहले हमें आत्म अवलोकन एवं स्वीकार्यता का साहस जुटान चाहिए ।
- हम किसी भी धर्म या संप्रदाय को मानते हों, उनके द्वारा सिखाई गयी अच्छी सीखों को सिर्फ मंदिर या पूजा स्थल पर ही नहीं, समाज में, अपने आस पास दैनिक जीवन में, व्यवसाय स्थल पर भी व्यवहार में लाना ही सच्ची श्रद्धा है ।
- अपने Workplace को Worship Place मानकर कार्य करना सीखें।

अजीत कुमार
सहायक कार्यकारी अभियंता (ई.)/
नामित राजभाषा अधिकारी
वीटीएस निदेशालय, गांधीधाम

क्यों इतनी लाचार है हिन्दी ?

माँ की ममता है, प्यार की हिन्दी,
अहं नही आभार है हिन्दी,
चढ़ते सूरज का आसार है हिन्दी,
फिर क्यों इतनी लाचार है हिन्दी?

टी.वी. सिनेमा अखबार है हिन्दी,
गीतों की झनकार है हिन्दी,
कान्हा की बाँसूरी है ये,
शारदा के वीणा की तार है हिन्दी,
जब जीवन वेदों का सार है हिन्दी,
तो क्यों इतनी लाचार है हिन्दी ?

झूठ पर करारा व्यंग्य है इसमें,
आतंक पर प्रहार है हिन्दी,
संस्कृति, सभ्यता, उदार है हिन्दी,

मानव का मानव से प्यार है हिन्दी,
जब इतनी समृद्ध सरोकार है हिन्दी
फिर क्यों इतनी लाचार है हिन्दी ?

भ्रष्टाचार पर वार है हिन्दी,
बातों का आधार है हिन्दी,
भाषा नहीं सेतू भी है ये,
भाईचार है, त्योहार है हिन्दी,

जब भारत का आधार है हिन्दी
फिर क्यों इतनी लाचार है हिन्दी?

अजय कुमार देबता
उप महानिदेशक
वीटीएस निदेशालय, गांधीधाम

जननायक

रहते है मजबूत, इरादों पर अड़े रहते हैं,
कोई है जो जलती धूप में हमारे लिए खड़े रहते है।

अपना घर छोड कर हमें सुरक्षा देते हैं,
होली हो, रमजान हो वे सड़कों पर खड़े रहते है ।

सियाचिन की कड़ी ठंड हो या जैसलमेर की ज्वाला,
तिल-तिल जलते हैं, बर्फ पर खड़े रहते हैं।

जब सोते हैं हम, कोई जागता है बर्फीली घाटियों में,
तुम सो पाओ चैन से, इसलिए सीमा पर वो खड़े रहते हैं ।

दुश्मनों को जन्नत पहुंचा कर, धरती को स्वर्ग बनाते हैं,
जो वादा किया है भारत माँ से उन वादों पर अड़े रहते हैं ।

जब क्रिकेट जीतने पर हम घर पर खुशी मनाते हैं,
उसी पल सीमा पर लड़कर ये शहीद हो जाते हैं।

जब फिल्मों के संवादों पर ताली पीटी जाती है,
हीरो के मंदिर बनाकर उनकी,
पूजा तक की जाती है।

देश के असली होरो ये है,
ये ही तो जननायक है।

मातृभूमि पर मरने वाले
कद में सदैव बड़े रहते हैं।

तिरंगे में लिपट जाने को,
वीर सदैव खड़े रहते है,
वीर सदैव खड़े रहते है...

डॉ. चंद्र शेखर पाटनी

उपनिदेशक, वनस्पति संरक्षण अधिकारी

क्षेत्रीय वनस्पति संगरोध केंद्र, कंडला

ऑपरेशन सिंदूर-रणबाँकुरों का गर्जन
(भारतीय सेना की वीरगाथा पर आधारित)

कायर फिर आए छुप-छुप के, पीठों पर फिर वार किया,
निर्देषो के लहू से अपनी नीचता को सार किया ।
भारत माँ की आँखें रोई, पर्वत तक उदास हुआ,
पर चुप रहना अब पाप बना, जब वीरों को आभास हुआ।

उठा सिंधु का बेटा फिर, अंगारे उसकी आँखों में थे,
रणभेरी बज उठी ज़ोरों से, रणवीरों की हुंकारों से।
''अब ना सहेंगे हम तुमको, अब ना रहम की बात होगी,
घर में घुसकर मारेंगे हम, अब बस सीधी घात होगी!''

ऑपरेशन 'सिंदूर' चला, जैसे तूफ़ान उठा हो कोई,
दुश्मन के दिल काँपे ऐसे, जैसे साक्षात काल हो कोई।
चुपके पहुँचे रणबाँकुरे, पर्वत-पर्वत पार किए,
सिंहनाद बन गरजे आगे, दुश्मन का संहार किए ।

बंकर फूटे, दिल दहले, छावनियाँ जलने लगीं,
जो थे छुपे अंधेरों में, उन्हे अपनी गलतियाँ खलने लगीं।
हर वार में अंगार छिपा था, हर चाल में चिंगारी थी,
ये युद्ध नहीं प्रतिशोध था, हर आँखों में अंगारी थी।

जैसे विजयरथ गर्जन करे, वैसा शौर्य का वार हुआ,
काँप उठा था हर दुर्ग उनका, जब 'भारत' का जयकार हुआ।
रेत पे बने महलों सा, घमंड उनका ढह गया,
चीन औ तुर्की जो साया बन गरजते थे, वो दंभ प्रलय में बह गया।

पाक नहीं, नापाक है वो, जो मासूमों पर वार करे,
उसके हर मंसूबे को अब, भारत की तलवार तरे।
जो लहू बहाया निर्दोषों का, उसका हिसाब चुकाया गया,
क्षमा नहीं, ये न्याय का काल है - दंभ उसका मिटाया गया।

फड़फड़ाता झंडा उनका शर्म से झुक गया,
ध्वस्त हुए अरमान सभी, युद्धविराम माँगना पड़ा।
भारत की एक हुंकार से, थर्राई सारी सीमाएँ,
शौर्य बहे हर साँस में, गूंज उठीं रण की गाथाएँ।

ना झुकते हैं, ना रुकते हैं - यही है भारत की रीत,
तिरंगे से हारे दुश्मन, लिख दी फिर से नव प्रीत।

जय हिन्द! वन्दे मातरम् !

देवेश सिंह पटेल

अधीक्षक, लेखा परीक्षा अनुभाग,

मुख्यालय केन्द्रीय वस्तु एवं सेवाकर,

कच्छ आयुक्तालय गांधीधाम

बस, अपने लिए लिखते हैं !

कौन कहता है । ये लेखनी पैसों से चलती है ।
पैसों से इसकी स्याही, अपना रंग बदलती है ।।

अंत की, जिरह की, अभिव्यक्ति है कलम ।
दिखते नहीन जो घाव, उन रगों की है ये मरहम ।।

नित नूतन जज्बातों का, समझो यही मरम।
सफ़र सा यू जीवन, फिर क्यूं सदियों सा भरम।।

अमीरी अमर नहीं, गरीबी सदाँ नहीं ।
ये तो मौसम हैं, जाते ही हैं, आने को सही।।

दुनिया के सयापौ की, अब परवाह है कहाँ।
दिल में रमे फकीरी, तो समाए झोले में जहां।।

जब दिल पर गुजरती, उसे लिख डालेते हैं हम ।
दर्पण है ये समाज का, इसे पालते हैं हम ।।

जिनमें नहीं कुब्बत, वो पैसे से बिकते हैं।
अरे ! हम तो गुमनाम से व्यक्ति हैं।।

बस, अपने लिए लिखते हैं !
बस, अपने लिए लिखते हैं !
बस, अपने लिए लिखते हैं !

भागीरथ राम
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिंदी)
केंद्रीय विद्यालय रेलवे गांधीधाम

वतन से प्यार

कोई भारतीय कहता है कोई इंडियन समझता है !
मगर मेरे दिल की बेचैनी को बस वतन समझता है !!
मैं वतन से प्यार करता हूँ वतन मुझसे प्यार करता है !
ये मेरा दिल समझता है या मेरा ईश्वर समफता है !!

हम राणा सांगा भगत आजाद के वंशज ।
स्वाभिमान के लिए मर मिटने को तत्पर।।
हम नहीं झुकने वाले बिकने वाले ।
भ्रष्ट सत्ता के फेके जाल में हम न फंसने वाले ।।

वतन की मिट्टी हमारी आन, बान और शान है।
इस मिट्टी के वास्ते न्योछावर हमारी जान है ।।
जब तक रगों में लहू और प्राण में आखिरी सांस है।
हर लम्हा हर पल वतन तेरे पे कुर्बान है।।

फैशन की इस दुनिया में कफन का चोला पहन कर ।
सिर पर केसरी पाघ और दिल में वतन का प्यार लेकर ।।
हम चले मौत की डगर पर देश की रक्षा का प्रण लेकर ।
लहराएगे तिरंगे को जग में जान की बाजी लगाकर।।

हम गांधी के बताए मार्ग पर चलने वाले ।
सत्य अहिंसा का अनुसरण करने वाले
वीर सिपाही हम देश की रक्षा करने वाले ।
जरुरत पड़ने पर वीर शिवा जी के मार्ग पर चलने वाले ।।

जब तक है जान मुख से निकलेगी एक ही आवाज।
जय हिंद...जय हिंद...जय हिंद...

नरेश सोनारीवाल
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक (बाह्य स्त्रोत)
वी.टी.एस. निदेशालय, गांधीधाम

गज़ल

शहरी सभ्यता जाने किन नज़ारों को ढूँढती हैं,
दीवारों का घर नहीं, घर में दीवारों को ढूँढती है ।

भला गाँव की पारिवारिकता से क्या मुकाबला इसका,
ये सभ्यता तो घर में परिवारों को ढूँढती है ।

आप भी कितने अज़ीब हैं जो आग में पानी डालते हैं,
ये वो चमक है जो बस अँगारों को ढूँढती है।

मस्तमौला, मस्तराम यहाँ नहीं बसते साहब,
ये बस्ती तो बस चाहत के मारों को ढूँढती हैं।

यहाँ की हर बात में नफ़रत है, धोखा है,
कहाँ खो गए ये प्यार के इशारों को ढूँढती है।

कौड़ियों के मोल अब इसने बिकना छोड़ दिया,
आज कल ये बस लाखों-हज़ारो को ढूँढती है।

पहले जो मज़ा साइकिल और ताँगों मे आता था,
वही प्यार का नज़ारा अब ये कारों में ढूँढती है।

तू भी इस भीड़ में कहीं खो न जाये ऐ नरेश,
ये आधुनिकता है, ये बस शिकारों का ढूँढती हैं ।

हम दोनों

लोग कहते हैं कि हम इश्क अच्छा लिखते हैं,
लोग कहते है कि हम इश्क अच्छा लिखते है।
अब इनको क्या बताएँ,
कि हम तो सिर्फ अच्छा-अच्छा लिखते हैं।

बड़ी तकलीफें हैं इस राह में,
उन तकलीफों को कम करने के लिए,
हर महीने संघर्ष की,
किश्ते भरते रहते हैं हम दोनों।

वो दिन हैं, तो मैं रात हूँ,
बिलकुल अलग हैं स्वभाव से।
तो सांझ में एक-दूसरे को
अक्सर ढूंढ लेते हैं हम दोनों ।

है बहुत कुछ ऐसा जो उनको मुझमें,
और मुझको उनमें नहीं पसंद।
तो थोड़ा-थोड़ा एक-दूसरे को,
सहन कर लेते हैं हम दोनों ।

एक ही बात बार-बार,
समझाने पर भी जब ना समझे।
तो मन ही मन एक-दूसरे को,
''ना समझ'' बोल देते हैं हम दोनों।

होती हैं कई बातों को लेकर,
बहस घंटों हमारे बीच भी।
पर फिर भी साथ साथ,
चल रह हैं हम दोनों।

संभव नहीं दो लोगों का,
ज़िन्दगी को देखने का नजरिया एक सा होना।
बस इसलिए समय-समय पर,
खुद को ये बात याद दिलाते रहते हैं हम दोनों।

जब प्रेम और सम्मान का भाव हो,
वंहा सब कुछ संभव हैं।
इस तथ्य की गहराई को,
बखूबी समझते हैं हम दोनों।

बस इसी तरह हर दिन,
धीरे धीरे इन्हीं सब बातों को समझकर,
एक दुसरे का साथ निभा रहे हैं हम दोनों।
प्रेम की अटूट डोर से बंध गए हम दोनों।
एक-दूसरे के हम सफ़र बन गए हैं हम दोनों।

श्रीमती दीक्षा राजपुरोहित
वरिष्ठ सहायक यातायात प्रबंधक
दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण

तुलना के सुर

लड़की :
आज हम नाराज़ हैं,
और हमें कोई नहीं मना सकता ।

लड़का :
तुम वो त्योहार हो,
जिसे हर दिन मैं मना सकता हूँ।
तेरी सुबह की मुस्कान के सहारे
पूरी ज़िंदगी बिता सकता हूँ।

लड़की:
बस, बस...फेंको मत!
जानती हूँ सब तुम्हारी करामातें।
पहले खूब तारीफ करते हो,
फिर मनवा लेते हो अपनी सारी बातें।

लड़का :
नहीं, नहीं...
आज यो भी कहूँगा, सच कहूँगा।
और फिर कभी शिकायत का माका नहीं दूँगा।
आज बताता हूँ,
मेरे लिए आखिर क्यों इतना खास है तू।

अंधेरी रात में पूर्णमासी के चाँद सी तू।
भोर में सूरज की पहली किरण सी तू।
बंजर ज़मीन पे रिमझिम बरसती बरसात सी तू।
धूप में छाँव का एहसास सी तू।
इस भागती हुई ज़िंदगी में एक ठहराव है तू।

मेरी वर्णमाला का अ भी तू और ज्ञ भी तू।
मेरी भूगोल में पृथ्वी भी तू और ब्रह्मांड भी तू।
मेरी गणित का शून्य भी तू और अनंत भी तू।

मेरा सफर भी तू, मंजिल भी तू।
मेरा भूत भी तू, भविष्य भी तू।

मेरे लिए नूर भी तू, कोहिनूर भी तू।
मेरी कमजोरी भी तू और ताकत भी तू।
मेरी ज़िंदगी की कविता का प्रसंग भी तू, सार भी तू।

मेरे ख्वाब जो मुकम्मल हो गए, वो हकीकत है तू।
मेरे ईश्वर की झलक दिखलाए, वो शख्सियत है तू।
इस झूठी दुनिया में सच का एहसास है तू।

बस, इसी लिए मेरे दिल के इतना पास है तू।
इतना खास है तू।
इतना खास है तू।

दि. 29-08-2025 को आयोजित नराकास कंडला/गांधीधाम की छमाही समिक्षा बैठक

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कंडला/गांधीधाम के वर्तमान सदस्य

गोदी सुरक्षा निरीक्षणालय

वीटीएस निदेशालय

सीमाशुल्क आयुक्त का कार्यालय

नमक अधीक्षक का कार्यालय

पोतपत्तन स्वास्थ्य संगठन

विकास आयुक्त का कार्यालय

संयुक्त आयकर आयुक्त का कार्यालय

मुख्य डाकघर गांधीधाम

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण नागर विमानक्षेत्र कंडला

क्षेत्रीय प्रबंधक कार्यालय पश्चिम रेलवे

केन्द्रीय विद्यालय इफको/रेलवे/गोपालपुरी

केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल

समुद्री वाणिज्य विभाग, पोत परिवहन मंत्रालय,

भारत पेट्रोलियम कॉरपोरेशन लिमिटेड

दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण

इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन लिमिटेड

हिंदुस्तान पेट्रोलियम कॉरपोरेशन लिमिटेड

भारत संचार निगम लिमिटेड

केंद्रीय भंडारण निगम

गेल (इंडिया) लिमिटेड

भारतीय खाद्य निगम

पावरग्रिड कार्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड

भारतीय जीवन बीमा निगम

न्यू इंडिया एश्योरेंस कंपनी लिमिटेड

यूनाइटेड इंडिया इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड

नेशनल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड

दि ओरिएण्टल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड

क्षेत्रीय वनस्पति संगरोध केंद्र, कंडला

भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक (सिडबी)

स्टेट बैंक ऑफ़ इंडिया

बैंक ऑफ बड़ौदा

बैंक ऑफ़ इंडिया

यूको बैंक

इंडियन ओवरसीज बैंक

केनरा बैंक

यूनियन बैंक ऑफ़ इंडिया

सेंट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया

बैंक ऑफ महाराष्ट्र

पंजाब नेशनल बैंक

पंजाब एंड सिंध बैंक